A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 05 जनवरी, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 96, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

जब भी निकला सितारा-ए-उम्मीद
कोहर के दरमियान से निकला।
– शकेब जलाली

फोटो : गिरीश शर्मा

सुप्रभात

पार्क में बैठा देख रहा हूँ
स्वेटर बुनती एक स्त्री को

वह इतनी तन्मयता से लीन है बुनाई में
जैसे धरती रत हो अपनी घुमाई में

बीच-बीच में वह तनिक रुकती है
जैसे देखती है हिरणी
पीछे आ रहे अपने छौनों को रुक-रुक के
वह बुने जा चुके हिस्से को निहारती है

वह उंगलियों से लेती है नाप
लंबाई और चौड़ाई का
और तैर जाती है एक उतनी ही लंबी चौड़ी
मुस्कान
उसकी आँखों में

मैं जानता हूँ
अभी जो उसकी आँखों में उतरा वो
कोई काँधा था
कोई पीठ थी
उसके बुने स्वेटर से लैस कोई बदन था
उसकी नरम गर्मी से तर कोई चेहरा था

मैं सोचने लगता हूँ
उस अनदेखे व्यक्ति के बारे में
और अनजाने ही करने लगता हूँ ईर्ष्या।

– आलोक कुमार मिश्रा

देश में गांवों का विकास पहले भी हो सकता था

पीएम ने कहा-मोदी का ही इंतजार क्यों करना पड़ा ?

कहा-जिन्हें किसी ने नहीं पूछा, हमने उन्हें ही पूजा है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को दिल्ली के भारत मंडपम में ग्रामीण भारत महोत्सव 2025 का इनॉगरेशन किया। पीएम ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा- मेरा ज्यादा समय गांव-देहात में गुजरा। मैंने परेशानियों को करीब से देखा है इसीलिए समस्याओं को हल करने का सपना देखा। पहले हमारे देश के सीमावर्ती गांवों को लेकर सोच क्या थी। उन्हें देश का आखिरी गांव कहा जाता था। हमने ये सोच बदली। हमने बताया कि सूरज की पहली और आखरी किरण यहां पड़ती है। ये हमारे लिए प्रथम गांव हैं। इनके लिए वाइब्रेंट विलेज योजना शुरू की। जिन्हें किसी ने नहीं पूछा उन्हें मोदी ने पूजा है। ग्रामीण भारत महोत्सव 4 से 9 जनवरी तक चलेगा। महोत्सव की थीम विकसित भारत 2047 है।

अजमेर दरगाह में चढ़ाई गई प्रधानमंत्री मोदी की चादर

अजमेर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से भेजी गई चादर ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर चढ़ाई गई। अजमेर दरगाह विवाद के बीच शनिवार को केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू पीएम की ओर से भेजी गई चादर लेकर अजमेर पहुंचे। दरगाह पर उन्होंने देश में अमन-चैन, भाईचारे की दुआ मांगी। इसके बाद प्रधानमंत्री का संदेश पढ़कर सुनाया। इससे पहले जयपुर एयरपोर्ट पर रिजिजू ने कहा,पीएम मोदी की ओर से चादर चढ़ाना पूरे देश की ओर से चादर चढ़ाने जैसा है। हम देश में अच्छा माहौल चाहते हैं। अजमेर में दरगाह पर लाखों लोग आते हैं। उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए ऐप और वेब पोर्टल लॉन्च किया गया। इस पर दरगाह पर मिलने वाली सुविधाओं से लेकर अन्य सभी तरह की जानकारियां मिलेंगी। शहर काजी मौलाना तौसीफ अहमद सिद्दीकी और कमेटी के सदस्यों ने 1 जनवरी को उर्स का ऐलान किया था।

सीएम बोले-चुनौती को जीतने वाले महावीर हैं दिव्यांग

साइकिल वितरण कार्यक्रम में हुए शामिल, अष्टावक्र, स्वामी रामभद्राचार्य का किया जिक्र

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शनिवार को सामाजिक न्याय और निःशक्तजन विभाग के कार्यक्रम में शामिल हुए। संचालनालय में अस्थि बाधित दिव्यांगजनों को निःशुल्क साइकिल वितरण के मौके पर सीएम ने दिव्यांगजनों को 'महावीर' बताया। सीएम ने कहा- जन्म लेने के बाद हमारे लिए जरूरी है किआने वाली चुनौतियों से अपना मार्ग बनाएं। मार्ग बनाकर विजेता के रूप में आएं। इसके लिए भगवान ने मौका दिया है।

कचरे को लेकर पीथमपुर में बवाल

रामकी फैक्ट्री पर पथराव, गाड़ियों के कांच फोड़े, उपद्रवियों को खदेड़ा

सीएम ने बुलाई बैठक, बोले- कचरा अभी डंप किया, जलाने का फैसला नहीं

भोपाल (नप्र)। यूनियन कार्बाइड के रासायनिक कचरे के पीथमपुर में निष्पादन को लेकर हो रहे विरोध-प्रदर्शन के बीच मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्पष्ट किया कि अभी केवल कचरा डंप किया गया है। तुरंत इसे जलाने का कोई निर्णय नहीं लिया गया है। पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री के जहरीले कचरे के निष्पादन का विरोध शनिवार को तीसरे दिन भी जारी है। आज सुबह करीब 10 बजे तारपुरा गांव से लगी रामकी एनवायरो इंडस्ट्रीज की फैक्ट्री पर पथराव किया गया। इसमें कुछ वाहनों के कांच टूट गए। इसके बाद पुलिस ने लोगों को फैक्ट्री के पास से खदेड़ा।

देश की विभिन्न संस्थाओं और सुप्रीम कोर्ट ने कचरे के निष्पादन के लिए पीथमपुर स्थित फैक्टरी को योग्य स्थान बताया है। विज्ञानियों की निगरानी में ही पूरी प्रक्रिया होगी। सबका जीवन बहुमूल्य है, कोई भी गलत कदम नहीं उठाएं।

उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए जनता से आग्रह किया कि गलतफहमी और झूठी बातों से बचें। जनभावनाओं का आदर करते हुए उच्च न्यायालय के समक्ष समस्त परिस्थितियों एवं व्यावहारिक कठिनाइयों के बारे में अवगत कराया जाएगा।

सरकार किसी के जीवन को खतरे में नहीं डालना चाहेगी- डॉ. यादव ने कहा कि राज्य के अंदर किसी भी प्रकार से किसी नागरिक के जीवन में कोई कष्ट आए, सरकार ऐसा कभी नहीं चाहेगी। सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट के माध्यम से यूनियन कार्बाइड के कचरे का निस्तारण करने के लिए जो जगह बताई गई है, उसके अनुसार वह योग्य स्थान है।

गलतफहमी से बचने की जरूरत

समाज के अंदर इसे लेकर कोई गलतफहमी फैलाता है, उससे बचने की जरूरत भी है। हम पूरी तरह से गंभीर होकर विज्ञानियों के मार्गदर्शन में ही कचरे का निष्पादन करेंगे। किसी भी प्रकार से किसी भी व्यक्ति के जान पर खतरा हो जाए, ऐसा हमारा कोई कदम नहीं हो सकता है।

विज्ञानियों के मार्गदर्शन में आगे बढ़ रहे

अभी तुरंत कचरा जलाने का निर्णय भी नहीं किया गया है। उसे केवल डंप किया गया है। योग्य प्रकार से विज्ञानियों और कोर्ट के मार्गदर्शन में ही हम आगे बढ़ रहे हैं। कोई दल अज्ञानता के आधार पर झूठी बात फैलाता है, तो ऐसी बातों से बचना चाहिए।

पथराव की वजह एक अफवाह - एसडीएम

मौके पर तैनात एसडीएम प्रमोद कुमार गुर्जर ने बताया- पथराव की वजह एक अफवाह को बताया जा रहा है। ये अफवाह फैलाई गई थी कि भोपाल से आए कंटेनरों को खोलकर यहां कचरा अनलोड किया जा रहा है। यह भी कहा गया कि अनलोडिंग में एक मजदूर घायल हुआ है। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ है। कोई कंटेनर नहीं खोला गया है। मैंने खुद सभी कंटेनरों को चेक किया है। उन्होंने कहा कि फैक्ट्री परिसर और इसके 100 मीटर दायरे में प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए गए हैं। इसका उल्लंघन करने वाले पर कार्रवाई की जाएगी।

सीएस ने कहा- जनता को भरोसे में लेकर आगे बढ़ेंगे

पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड के कचरे को लेकर हो रहे विरोध के बीच मुख्य सचिव अनुराग जैन ने कहा- राज्य सरकार इस मामले में हाईकोर्ट से समय देने की मांग करेगी। कोर्ट को मौजूदा परिस्थितियों के बारे में जानकारी देंगे। स्थानीय लोगों को भरोसे में लेकर ही सरकार अब इस मामले में आगे बढ़ेगी। उन्होंने कहा- कोर्ट से कितना वक्त मिलेगा, कह नहीं सकते। कचरे की शिफ्टिंग से लेकर आगे की पूरी प्रोसेस में सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय की गई गाइड लाइन को अक्षरशः पालन किया जा रहा है।

समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है हमारी सरकार: मुख्यमंत्री

मोहन ने ग्रहण किया सुर्दशन चक्र,पानी आने से बदलेगी किसान की जिंदगानी,मुख्यमंत्री ने लटेरी में 132 करोड़ के कार्यों का किया लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया में सर्वश्रेष्ठ देश बनने की ओर अग्रसर है। हमारी सरकार सभी वर्गों के कल्याण के लिए कार्य कर रही है। युवा, गरीब, किसान और महिलाएं हमारी विशेष प्राथमिकता है। मध्यप्रदेश तेज गति से देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनने के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है। इस अवसर पर विधायक उमाकांत शर्मा ने सीएम मोहन यादव को सुर्दशन चक्र भेंट किया।

मुख्यमंत्री शनिवार को लटेरी (विदिशा) में विकास कार्यों के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम में विशाल जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने क्षेत्र के लिए 132 करोड़ रुपए से अधिक के विकास कार्यों का लोकार्पण/ शिलान्यास किया। इनमें 80 करोड़ 16 लाख रुपए के 54 विकास कार्यों का भूमि-पूजन और 51 करोड़ 96 लाख रुपए के 198 विकास कार्यों का लोकार्पण शामिल है। मुख्यमंत्री ने विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हित लाभ भी वितरित किए। कार्यक्रम में विदिशा जिले में 505 हेक्टेयर चरनोई की

भूमि को अतिक्रमण मुक्त किए जाने पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आधुनिक युग के भगीरथ हमारे प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रयासों से केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजनाओं से प्रदेश को दो बड़ी सिंचाई परियोजनाएं मिली है। इससे न केवल बुंदेलखंड अपितु मालवा और चंबल क्षेत्र में भी बड़े क्षेत्र में सिंचाई, पेयजल सुविधा मिलेगी।

इस क्षेत्र के भी 360 गांव को जल उपलब्ध होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारा लक्ष्य है हर किसान के खेत में पानी पहुंचाना। हर खेत में पानी आने से किसान की जिंदगानी बदलेगी। कृषि उत्पादन में हम पंजाब, हरियाणा को भी पीछे छोड़ने वाले हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि, पशुपालन, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, रोजगार आदि सभी क्षेत्रों में प्रदेश में तेज गति से विकास हो रहा है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25°c न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 05 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

डॉक्टर ने 6 लोगों पर चढ़ाई कार, महिला समेत 6 लोगों को रौंदा

- जबलपुर में 100 की स्पीड से चला रहा था; बोला-अचानक आंखों के सामने अंधेरा छा गया

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में नशे में धुत एक डॉक्टर ने शहर की सड़कों पर 100 की स्पीड से कार दौड़ाई। इस दौरान बीच चौराहे पर पहले एक कार को टक्कर मारी, फिर पैदल जा रहे 6 लोगों को रौंद दिया। इस घटना में एक बुजुर्ग महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई।

शुक्रवार रात की इस घटना का वीडियो शनिवार को सामने आया है। आरोपी डॉक्टर का नाम संजय पटेल है। वीडियो में दिख रहा है कि वह कार से शहर के अहिंसा चौक से एसबीआई चौक तरफ जा रहे थे। उनकी तेज रफ्तार कार ने एक कार को टक्कर मार दी। फिर यहां से कुछ ही दूरी पर राहगीरों पर कार चढ़ा दी।

कार की स्पीड इतनी तेज थी कि टक्कर लगते ही एक बुजुर्ग महिला उछलकर कार के बोनट पर आ गई। डॉक्टर फिर भी कार भगाता रहा। आगे जाकर उनसे कुछ और लोगों को रौंद दिया। इस घटना में घायल 4 लोगों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जिसमें से एक की हालत नाजुक बताई जा रही है।

हादसे में इनकी हुई मौत- मुन्नी बाई सेन-माढ़ोताल निवासी ,गौरी शंकर दुबे नरसिंहपुर के गाडरवारा के रहने वाले थे।

आरोपी डॉक्टर को पकड़ा- हादसे के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने आरोपी डॉक्टर को हिरासत में ले लिया। साथ ही उसकी कार भी जब्त कर ली। इधर, घटना को लेकर स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क पर लगातार अतिक्रमण फैला रहता है, जिसके चलते इस तरह की घटना हो रही है।

डॉक्टर संजय पटेल की हालत भी नाजुक- जिस डॉक्टर संजय पटेल ने कार से 6 लोगों को रौंदा था, बताया जा रहा है कि वह हार्ट पेशेंट है। उसे 80 से 90 प्रतिशत तक हार्ट ब्लॉकेज है। पुलिस की पूछताछ में डॉक्टर संजय पटेल ने बताया कि जब वह अहिंसा चौक से विजयनगर तरफ अपने घर जा रहा था, इस दौरान जैसे ही एसबीआई चौक पहुंचा तो उसकी आंखों में अंधेरा छा गया और इसके बाद उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। जिससे ये घटना हो गई।

घटना के बाद आरोपी डॉक्टर संजय पटेल की हालत भी नाजुक बनी हुई है। पुलिस की अभिरक्षा में उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

घटना के बाद हटाया अतिक्रमण- घटना के बाद शनिवार की सुबह से ही अहिंसा चौक से लेकर दीनदयाल तक चौक तक नगर निगम ने अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। इस दौरान 30 से अधिक अतिक्रमण जो कि सड़क पर फैले हुए थे, उन्हें हटाया गया है।

विजयनगर थाना प्रभारी वीरेंद्र सिंह पवार ने बताया- जैसे ही घटना की जानकारी मिली तुरंत की टीम के साथ मौके पर पहुंच कर कर सवार डॉक्टर संजय पटेल को अभिरक्षा में लिया गया। इसके साथ ही सभी घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया था।

देश की महिला साहित्यकारों का सम्मेलन आज

भोपाल। रविवार 5 जनवरी को राजधानी भोपाल में देशभर की महिला साहित्यकारों का सम्मेलन होगा। प्रोफेसर मनीषा बाजपेई ने बताया कि अर्चना प्रकाशन के बैनर तले आयोजित होने वाला यह सम्मेलन एन आईटीटीटीआर में सुबह 9:30 बजे से शुरू होगा। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महिला एवं बाल विकास विभाग की मंत्री निर्मला भूरिया करेंगी, जबकि समापन सत्र की अध्यक्षता सांसद माया नारोलिया द्वारा की जाएगी। इसमें देशभर की महिला साहित्यकार शामिल होंगी। 'साहित्यिक सृष्टि-भारतीय दृष्टि' पृष्ठभूमि के साथ महिला साहित्यकार अपने विचार रखेंगी।

इस सम्मेलन में प्रोफेसर कुमुद शर्मा, रश्मि सावंत, डॉ. मेधा पुरोहित, डॉ. साधना बलबटे, डॉ. आरती दुबे, प्रो. शशिकला, डॉ. सोनाली मिश्रा, डॉ कुमकुम गुप्ता, डॉ वंदना मिश्रा, सुनीता यादव, रक्षा दुबे, डॉ. निवेदिता शर्मा वक्तव्य देंगी। साथ ही डॉ. निवेदिता शर्मा, डॉ. सविता सिंह भदौरिया की किताब का विमोचन भी किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

सेना का ट्रक खाई में गिरा, 4 जवानों की मौत

जम्मू-कश्मीर की घटना,3 जवान गंभीर रूप से घायल

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले में शनिवार दोपहर सेना का ट्रक खाई में गिर गया। हादसे में 4 जवानों की मौत हो गई। 2 जवान गंभीर घायल हैं। उन्हें नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कुल 6 जवान ही सवार थे। अधिकारियों ने बताया कि हादसा जिले के एसके पायीन इलाके में हुआ। यहां ट्रक सड़क से फिसलकर खाई में गिरा। रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। घटना की डिटेल कुछ देर बाद आर्मी स्पोकपर्सन जारी कर सकते हैं। इससे पहले 24 दिसंबर को पुंछ जिले आर्मी वैन 350 फीट गहरी खाई में गिरी थी। वैन में 18 जवान सवार थे। इनमें से 5 की

मौत हो गई थी। हादसे में शामिल सभी जवान 11 मराठा रेजिमेंट के थे। सेना ने बताया कि काफिले में 6 गाड़ियां थी, जो पुंछ जिले के पास ऑपरेशनल ट्रैक से होते हुए बनोई इलाके की तरफ जा रही थीं। इसी दौरान एक वाहन के ड्राइवर के संतुलन खोने की वजह से वैन खाई में गिर गई। नवंबर में दो अलग-अलग घटनाओं में 5 जवानों की मौत इससे पहले नवंबर में दो अलग-अलग घटनाओं में 5 जवानों की मौत हो गई थी। 4 नवंबर को राजौरी में सड़क हादसे में दो जवानों की जान चली गई थी।

मणिपुर में हिंसा एसपी ऑफिस पर पत्थरबाजी

कुकी समुदाय के हमले में एसपी और पुलिसकर्मी घायल

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के कांगपोकपी जिले में शुक्रवार शाम को कुकी समुदाय के लोगों ने पुलिस अधीक्षक ऑफिस पर हमला कर दिया। हमले में एसपी मनोज प्रभाकर समेत कई पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। अधिकारियों के मुताबिक कुकी लोगों की मांग इंफाल पूर्वी जिले के बॉर्डर पर मौजूद गांव सैबोल से सुरक्षाबल को हटाने की है। समुदाय का आरोप है कि एसपी ने सेंट्रल फोर्स को गांव से बाहर नहीं निकाला है। अधिकारियों ने कहा

कि आदिवासी एकता समिति ने डिप्टी कमिश्नर ऑफिस भी बंद कराया। एसपी ऑफिस पर फायरिंग की गई और पत्थर फेंके गए। कई वाहनों को नुकसान हुआ है। सुरक्षाबलों की जवाबी कार्रवाई में कई प्रदर्शनकारी भी घायल हो गए हैं। दरअसल, सैबोल गांव में 31 दिसंबर को सुरक्षाबलों ने कथित तौर पर महिलाओं पर लाठीचार्ज किया था। इसके विरोध में कुकी संगठन के लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। घटना थमनपोकपी के पास उयोकचिंग इलाके में हुई थी। भीड़ ने आर्मी, एसएसएफ और सीआरपीएफ की तैनाती में बाधा पहुंचाई थी।

देशभर के स्कूली बच्चों की कला प्रतिभा को प्रोत्साहन देने 'कला उत्सव' में आयोजित हो रही विभिन्न प्रतियोगिता

भोपाल। देशभर के स्कूली बच्चों की कला प्रतिभा को प्रोत्साहन देने और उन्हें प्रदर्शन हेतु एक राष्ट्रीय मंच उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान और पंडित सुन्दरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल में चार दिवसीय कला उत्सव 2024-25 के दूसरे दिन दिनांक 4 जनवरी, 2024 को विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। आज दिन-भर चली प्रतियोगिताओं में संगीत गायन, संगीत वादन, नृत्य, थिएटर, दृश्य कला और पारंपरिक कहानी वाचन की श्रेणियों में प्रतिभागी छात्र-छात्राओं ने निर्णायक मंडल के सामने अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन किया। इसमें संगीत गायन और थिएटर विधा में 19 टीमों तथा संगीत वादन, नृत्य और पारंपरिक कहानी वाचन की विधाओं में 20 टीमों की प्रस्तुतियाँ हुईं।

इस बार के कला उत्सव में प्रारंपरिक कहानी वाचन की एक नई प्रतियोगिता श्रेणी की शुरुआत की गई है जिसमें प्रतिभागियों ने अपने-अपने राज्यों एवं संस्कृतियों के ऐतिहासिक-पौराणिक या समसामयिक चरित्रों नायक-नायिकाओं, लोक-विश्वासों, आस्थाओं, लोक-कथाओं आदि को पारंपरिक कथा वाचन की शैली में प्रस्तुत किया। सिक्किम से आए प्रतिभागियों द्वारा महाभारत के द्रौपदी चीरहरण की कथा प्रस्तुति के साथ आज की प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। इसके बाद त्रिपुरा की टीम ने 'राइमा साइमा' और उत्तराखंड की टीम ने 'घघूती' की लोककथा को और उत्तर प्रदेश की टीम ने कावड़ बाचना कला शैली में दानवीर कर्ण की कहानी ब्रज भाषा में प्रस्तुत की। केंद्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय और एकलव्य मॉडल आवासीय स्कूल सहित सिक्किम, तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, अंडमान निकोबार द्वीप समूह, चंडीगढ़, लद्दाख, जम्मू कश्मीर, दादरा नगर हवेली और दमन-दीव, लक्षद्वीप, दिल्ली, पुदुच्चेरी, आंध्र प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश की कुल 18 टीमों ने आज निर्णायक मंडल के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया।

नृत्य विधा में अरुणाचल प्रदेश का पोपिर, असम का बिहू, छत्तीसगढ़ का मांदरी, मध्य प्रदेश का नोर्टा, ओडिशा का ढेमसा तथा बिहार, नागालैंड, मिज़ोरम, मेघालय के समूह लोक नृत्यों के साथ भरतनाट्यम और कथक जैसे शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुतियाँ हुईं। इन नृत्य प्रस्तुतियों रंग-बिरंगे परिधानों और लुभावने प्रॉप्स ने देखने वालों और निर्णायक मंडल को पूरे समय बांधकर रखा।

संगीत गायन और वादन की विधा में प्रतिभागियों ने हिंदुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत के साथ ही देश के अलग-अलग राज्यों एवं संस्कृतियों के लोक संगीत एवं लोक वाद्यों की प्रस्तुतियों से निर्णायक मंडल के सामने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। इसमें तबला, सरोद, बांसुरी, सितार और शास्त्रीय तविल वादन की एकल प्रस्तुतियाँ तथा ओडिशा, सिक्किम, नागालैंड, मिज़ोरम और दमन-दीव की पारंपरिक लोक समूह वादन प्रस्तुतियाँ हुईं। इन लोक समूह प्रस्तुतियों में गिटार, ड्रम, नगाड़ा, हारमोनियम, दरखुआंग, खुआंग, दरबू, बेंग्बुंग, सेकी, कोटा-कोडुकी, पारंपरिक नागा ड्रम, लिसान, तासा, झांझ, ढोल, ताती, खोल, तानपुरा आदि वाद्यों की प्रस्तुतियाँ शामिल थीं।

संगीत गायन के अंतर्गत निकोबारी आदिवासी लोक संगीत, वृंद गान, लद्दाखी लोक गीत, डोगरी भाख, गोंधल, मोइरंग साई, रिसा, हखरे लुसु, बाउल, भजन आदि लोक गान प्रस्तुत किए गए। निकोबारी आदिवासी लोक संगीत एक सामूहिक भक्ति गीत प्रस्तुति थी जिसमें समुद्र के ऊपर सूर्योदय की सुंदरता और प्रकृति के साथ आदिवासी जीवन के सहअस्तित्व को दर्शाया गया। पुदुच्चेरी की टीम ने तमिल लोक संगीत नाटूपुरापाटू प्रस्तुत किया जिसमें कृषि के विभिन्न रंगों और परिवर्तनों को दर्शाया गया। शास्त्रीय गायन में राग दुर्गा, राग यमन कल्याण, राग बिहाग, राग तोड़ी (मियां की तोड़ी), राग अभोगी कन्नड आदि की संगीतमय प्रस्तुतियों ने सभी को भाव-विभोर किया।

इसके अलावा, चित्रकला, मूर्तिकला, खिलौना निर्माण और अभिनय की प्रतियोगिताओं में भी विद्यार्थियों ने अपनी कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता से निर्णायक मंडल के सदस्यों का मन मोहा। पूरे दिन बच्चों ने अपने-अपने राज्यों की पारंपरिक वेशभूषा और लोक-कला रूपों को बेहतरीन तरीके से प्रदर्शित किया। इस दौरान निर्णायक मंडल में शामिल प्रख्यात कलाकारों द्वारा उनके प्रदर्शन को देखा-परखा गया।

कला उत्सव के अंतर्गत होने वाली प्रतियोगिताएं 5 जनवरी 2025 तक आयोजित की जाएँगी और 6 जनवरी को समापन समारोह में माननीय राज्यपाल, मध्यप्रदेश द्वारा विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

छत्तीसगढ़ में पत्रकार हत्याकांड में तीन आरोपी गिरफ्तार...

सिर पर वार किया, ताकि ये लगे कि नक्सलियों ने मारा है

पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया, जांच जारी पत्रकार की हत्या के विरोध में बीजापुर में बंद का आह्वान

बीजापुर। छत्तीसगढ़ के बीजापुर में पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या के मामले में पुलिस ने कांग्रेस नेता और ठेकेदार सुरेश चंद्राकर के दो भाई रितेश चंद्राकर और दिनेश चंद्राकर सहित एक मजदूर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर रही है। सुरेश चंद्राकर को पकड़ने आज सुबह हैदराबाद के लिए पुलिस की टीम रवाना हुई है। बताया जा रहा है कि इस मामले में मुख्य आरोपित रितेश चंद्राकर ने ही हत्या की है। हत्या के बाद साक्ष्य छुपाने के लिए सेप्टिक टैंक में शव को फेंककर ऊपर से कांक्रीट की ढलाई कर दी गई थी।

इधर घटना के विरोध में बीजापुर जिला मुख्यालय पूरी तरह से बंद है। पूरे संभाग से पत्रकार बीजापुर पहुंचे हैं। मुख्य मार्ग में चक्काजाम कर आरोपियों की गिरफ्तारी और कड़ी कार्रवाई की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं।

नक्सली हत्या दर्शाने का था प्रयास

मुकेश की निर्ममता से हत्या करने के लिए उसके सर पर कुल्हाड़ी या धारदार हथियार से वार किया गया था। नक्सली भी इसी तरीके से हत्या करते हैं। संभवतः हत्या के बाद किसी जंगल में शव फेंक कर नक्सली घटना बताने का प्रयास था, लेकिन भीड़भाड़ वाला क्षेत्र होने से शव निकाल नहीं पाए। इसलिए सेप्टिक टैंक में शव डाल कर ढलाई कर दी गई।

रितेश की गाड़ी भी की जब्त

हत्याकांड में बीजापुर पुलिस ने रितेश चंद्राकर को गिरफ्तार करने के साथ उसकी गाड़ी को भी रायपुर से जब्त किया है। रितेश ने फरार होने के लिए थार गाड़ी की नंबर प्लेट बदल ली थी। गाड़ी में सीजी-20- 3333 की जगह सीजी 04 पीके 1 नंबर प्लेट लगा दी थी। ऐसा कर वो पुलिस को गुमराह करना चाह रहा था।

दिल्ली में एएपी को काउंटर करने कांग्रेस का गांरटी पत्र तैयार

छह से होगी घोषणा, पार्टी ने बना लिया है बड़ा प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली चुनाव में 11 साल के सूखे को खत्म करने के लिए कांग्रेस हर कोशिश कर रही है। लोकसभा चुनाव में एएपी के साथ लड़ने वाली कांग्रेस इस बार अकेले ही दिल्ली की सत्ता हासिल करना चाहती है। अब मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो आम आदमी पार्टी की 5 गारंटी के जवाब में कांग्रेस भी अपना गारंटी पत्र तैयार कर लिया है। रिपोर्ट्स की मानें तो इसे जल्द लॉन्च भी किया जाएगा। 6 जनवरी से कांग्रेस के बड़े नेता चरणबद्ध तरीके से गारंटी की घोषणा करेंगे। इसके साथ ही पार्टी का चुनाव प्रचार भी शुरू हो जाएगा। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, आम आदमी पार्टी की 5 गारंटी के जवाब में कांग्रेस महिलाओं को यूपीआई के जरिए हर महीने पैसे देने, स्वास्थ्य बीमा, युवाओं को नौकरी की गारंटी, मजदूरों के लिए आय की गारंटी और सबको राशन देने जैसे वादे कर सकती है।

साइंटिस्ट डॉ. राजगोपाला चिदंबरम का निधन

मुंबई (एजेंसी)। भारत के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजगोपाला चिदंबरम का शनिवार तड़के निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे। परमाणु ऊर्जा विभाग के अधिकारी ने बताया कि तड़के 3 बजकर 20 मिनट पर मुंबई जसलोक अस्पताल में राजगोपाला ने अंतिम सांस ली। देश में न्यूक्लियर वेपंस डेवलपमेंट में डॉ. राजगोपाला की सक्रिय भूमिका रही। 1974 के पोखरण टेस्ट में भी उनका अहम योगदान रहा। 1998 के पोखरण टेस्ट में उन्होंने साइंटिस्ट की टीम को लीड किया था। डॉ. राजगोपाला को 1975 में पद्म श्री और 1999 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डॉ. राजगोपाला के निधन पर शोक व्यक्त किया। उन्होंने कहा, भारत की वैज्ञानिक और कूटनीतिक ताकत को मजबूत करने में डॉ. राजगोपाला की अहम भूमिका रही।

अब माता-पिता की सहमति से बनेगा नाबालिगों का सोशल मीडिया अकाउंट

- डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट के नियमों का ड्राफ्ट तैयार, केंद्र ने जनता से मांगे सुझाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को सोशल मीडिया पर अकाउंट खोलने के लिए अपने पेरेंट्स की सहमति लेना जरूरी होगा। इसके लिए केंद्र सरकार ने डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट, 2023 के तहत नियमों का ड्राफ्ट तैयार किया है। इस ड्राफ्ट को लोगों के लिए शुक्रवार को जारी किया गया। मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी ने नोटिफिकेशन में कहा कि लोग साइट पर जाकर इस ड्राफ्ट को लेकर अपनी आपत्तियां दर्ज करा सकते हैं और सुझाव भी दे सकते हैं। लोगों की आपत्तियों और सुझावों पर 18 फरवरी से विचार किया जाएगा। ड्राफ्ट में पेरेंट की सहमति लेने का सिस्टम भी बताया गया करीब डेढ़ साल पहले इस बिल को संसद से मंजूरी मिली थी। ड्राफ्ट के लिए जारी नोटिफिकेशन के मुताबिक डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट के तहत शक्तियों के आधार पर नियमों का ड्राफ्ट जारी किया गया है।

वीआईपी के लिए सफेद मीडिया का आसमानी पुलिस का नीला पास

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विशेष सतर्कता बरती जा रही है। खालिस्तान समर्थक गुरपतवंत सिंह पन्नू और अन्य की धमकियों को देखते हुए पुलिस विभिन्न सुरक्षा उपाय कर रही है। मेले के लिए छह अलग रंगों के ई-पास जारी किए जा रहे हैं। पुलिस, अखाड़े और वीआईपी के लिए विभिन्न रंगों के ई-पास निर्धारित किए गए हैं। श्रेणी के अनुसार कोटा तय किया जा रहा है। देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए विभागीय स्तर पर नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की जा रही है। मेला प्रशासन हाईकोर्ट, विदेशी राजदूतों, विदेशी नागरिकों और अप्रवासी भारतीयों के साथ केंद्र और राज्य विभागों को सफेद ई-पास जारी कर रहा है। अखाड़ों और संस्थाओं को केसरिया, फूड कोर्ट को पीले, मीडिया को आसमानी, पुलिस बल को नीले तथा आपातकालीन को लाल रंग के पास मिलेंगे।

महाकुंभ के श्रद्धालुओं के लिए स्टेशन की कलर कोडिंग

लाल रंग लखनऊ-वाराणसी तो हरा कानपुर के यात्रियों के लिए, रेलवे ने एंट्री-एग्जिट तय की

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ के लिए रेलवे की तैयारी अंतिम दौर में हैं। लाखों श्रद्धालुओं के स्वागत और सुविधाजनक यात्रा के लिए रेलवे ने बड़े पैमाने पर तैयारियां की हैं। प्रमुख स्नान पर्वो के दिन करोड़ों श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इसको लेकर प्रयागराज रेल मंडल के सभी स्टेशनों पर एंट्री और एक्जिट के प्लान तैयार किया गया है। स्टेशन परिसर में श्रद्धालुओं को अफरा-तफरी और समस्याओं का सामना न करना पड़े, इसके लिए एंट्री और एग्जिट के अलग-अलग रास्ते बनाए गए हैं।

रेलवे ने यात्रियों के लिए कलर कोडिंग भी की है। यात्री आश्रय स्थल के कलर, टिकट के कलर और रूट आदि को रेलवे ने फाइनल कर दिया है। रूट, शहर के यात्री कहां जाएं। किस प्लेटफार्म पर उनकी ट्रेनें होंगी। यह पहले से तय है।

महाकुंभ में 45 करोड़ श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। इसमें से करीब 10 करोड़ श्रद्धालु ट्रेन से प्रयागराज पहुंचेंगे। श्रद्धालुओं की संख्या को लेकर प्रयागराज रेल मंडल की महाकुंभ के दौरान 3,000 मेला स्पेशल ट्रेनों के साथ लगभग 13,000 ट्रेनें चलाने की योजना है। जन संपर्क अधिकारी अमित सिंह ने बताया- मुख्य स्नान पर्वों के दिन प्रयागराज जंक्शन में एंट्री या प्रवेश सिटी साइड और प्लेटफोर्म नं-1 की तरफ से होगा। एक्जिट सिविल लाइंस साइड की तरफ से होगा। अनारक्षित यात्रियों को दिशावार, उनके गन्तव्य स्टेशन के हिसाब से यात्री आश्रय स्थलों के माध्यम से सही ट्रेन और उसके प्लेटफॉर्म की ओर ले जाया जाएगा।

मिलेंगे रंगीन टिकट, रेल कर्मियों की जैकेट पर लगे क्यूआर कोड से होंगे बुक

प्रयागराज रेलवे मंडल श्रद्धालुओं को डिजिटल सुविधाएं भी देगा। श्रद्धालु रेल कर्मियों की जैकेट पर लगे क्यूआर कोड से टिकट बुक कर सकेंगे। इससे श्रद्धालुओं को लंबी कतरों में नहीं लगना होगा। उत्तर मध्य रेलवे के वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी अमित मालवीय ने बताया- महाकुंभ के दौरान, रेलवे के वाणिज्य विभाग के कर्मी प्रयागराज जंक्शन पर हरे रंग की जैकेट पहन कर विशेष ड्यूटी पर तैनात होंगे। इन जैकेट पर एक क्यूआर कोड अंकित होगा, जिसे श्रद्धालु अपने मोबाइल फोन से स्कैन कर यूटीएस मोबाइल ऐप डाउनलोड कर सकेंगे। 45 दिनों के महाकुंभ में 26 दिन यात्रियों को रंगीन जनरल टिकट मिलेंगे। इसके लिए संगम नगरी के आठ रेलवे स्टेशनों पर कलर कोडिंग की व्यवस्था की गई है।

परिक्रमा

झगड़ा नहीं लेकिन इलाज जरुरी है - भागवत

अरुण पटेल
प्रबंध संपादक

मध्यप्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने सभी लोगों का आह्वान किया है कि वे राष्ट्र निर्माण में आगे आयें और संघ की गतिविधियों से जुड़ें। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि संघ का डंडा चलाने का उद्देश्य झगड़ा करना नहीं लेकिन कोई आ जाये तो उसका इलाज करना ही पड़ता है। तीन जनवरी 2025 शुक्रवार को दशहरा मैदान पर संघ के मालवा प्रान्त का घोषवादन हुआ और डॉ. भागवत की उपस्थिति में संघ के मालवा अंचल के 28 जिलों से आये 870 स्वयं सेवकों ने एक घंटे सात मिनट तक घोषवादन किया। इसी दौरान संघ के मुखिया मोहन भागवत का यह भी कहना था कि मनुष्य लाठी चलाने से वीरता प्राप्त करता है और निर्भीक बनता है। उन्होंने बताया कि घोष वादन कला का प्रदर्शन नहीं अपितु इसका उद्देश्य राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरुकता बढ़ाना है। यह बीस से चालीस लोगों के बीच हो सकता था लेकिन इसे सार्वजनिक रुप से करने का लक्ष्य यही है कि आप सभी राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभायें। उन्होंने इस दौरान संघ की 100 वर्षों की यात्रा व उद्देश्यों के विभिन्न पहलुओं पर भी प्रकाश डाला।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में यह कार्यक्रम हुआ था। घोष वादकों ने बंसी की धुन पर 'राम आयेंगे, अवध में राम आयेंगे' ध्वनि की मनमोहक प्रस्तुति दी। घोष दल ने 100 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में 100 की आकृति बनाई और इसी प्रकार शिवलिंग व स्वास्तिक की आकृति भी बनाई गई। भागवत का विचार था कि इतने स्वयंसेवक संगीत का प्रस्तुतिकरण कर रहे हैं जो कि अपने आप में एक आश्चर्यजन घटना है। हमारी रण संगीत परंपरा जो विलुप्त हो गयी थी अब फिर से लौट आई है। महाभारत काल में पांडवों ने युद्ध के समय घोष किया था उसी तरह संघ ने भी इसे पुनः जागृत किया है। उनका कहना था कि संघ जब शुरु हुआ तब शारीरिक कार्यक्रमों के साथ संगीत की भी जरुरत थी। उस समय सेना और पुलिस से भी संघ ने संगीत सीखा। यह सब देश भक्ति के लिए किया गया। डॉ. भागवत यह नहीं मानते हैं कि हमारा देश दरिद्र है, बल्कि उनकी सोच है कि हम अब वैश्विक परिदृश्य में खड़े हुए हैं यानी पटल पर हमारी उपस्थिति है। संघ के कार्यक्रमों से मनुष्य में सदुणों की वृद्धि होती है। डंडा चलाने का उद्देश्य झगड़ा करना नहीं होता बल्कि यह उस स्थिति के लिए है जब कोई हमारे सामने आकर गिर जाये तो हम उसकी मदद कर सकें। लाठी चलाने वाला व्यक्ति वीर होता है वह कभी डरता नहीं। उनका कहना था कि संगीत के अनुरागी सब हैं लेकिन साधक सब नहीं हैं। अपना-अपना काम करते हुए समय निकाल कर अभ्यास करते हुए उन्होंने यह प्रस्तुति दी है। स्वाभाविक रुप से इसे सुनकर सभी को आश्चर्य हुआ है।

डॉ. भागवत ने यह भी बताया कि ध्वजारोहण के समय आपने राज राजेश्वरी राग में जो रचना सुनी वह सबसे पहले बनी, बाद में संचलन पर यह व्यायाम योग के लिए अनुकूल धुनें भारतीय संगीत के आधार पर बनी, जो दुनिया में सबके पास है, वह हमारे पास भी होना चाहिये। हम किसी से पीछे नहीं हैं। संघ के आयोजन प्रदर्शन के लिए नहीं होते बल्कि इससे मनुष्य की संस्कृति, स्वभाव और संस्कार बनते हैं। इससे देश कार्य करने के लिए गुण के साथ व्यक्ति भी आवश्यक है। इस अवसर पर इंदौर के 500 से ज्यादा समाजों के प्रमुख जनप्रतिनिधि,प्रबुद्धजन और स्वयंसेवक परिवार सहित शामिल हुए। भागवत का कहना था कि संघ की यह तपस्या जब सफल होगी जब लोग ऐसा पूछने लगेंगे कि संघ की शाखा कहां लगती है। उन्होंने लोगों को यह भी ध्यान दिलाया कि इसकी जड़ें कहां हैं और वह जड़ तक पहुंचे। अच्छे जीवन के साथ हमारे देश का जीवन और अच्छा बने इस दिशा में काम करें।

यूनियन कार्बाइड के कचरे का निष्पादन और विवाद

यूनियन कार्बाइड के कचरे के निष्पादन और परिवहन तथा धार जिले में पीथमपुर के निकट डम्प एवं निष्पादन किये जाने के संबंध में जो कथित विवाद पैदा हुआ है उसके संबंध में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक उच्च स्तरीय बैठक में लोगों से यह अपील करते हुए कि सही तथ्य जाने बिना भ्रम में नहीं आयें। उन्होंने यह भरोसा दिलाया कि कोर्ट का निर्देश आने तक यूनियन कार्बाइड के कचरे के निष्पादन पर आगे कार्रवाई नहीं की जायेगी। इस कार्रवाई को लेकर जहां राजधानी भोपाल के लोगों ने राहत की सांस ली वहीं धार जिले व इंदौर में लोगों को आशंका है कि अब जब इस कचरे का निष्पादन होगा तो उनके स्वास्थ्य पर इसका विपरीत असर पड़ेगा। इस स्थिति को भांपते हुए ही डॉ. यादव ने लोगों को उक्त भरोसा दिलाया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मध्यप्रदेश सरकार एक ऐसी सरकार है जो जनता के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। इसी नाते हम सदैव जनता के हित को लेकर आगे बढ़े हैं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशऔर हाईकोर्ट के आदेश के परिपालन में यूनियन कार्बाइड का कचरा पीथमपुर पहुंचाया गया है। हमने केवल न्यायालय की याचिकाओं और आदेशों के तारतम्य में सुरक्षा मानकों का पालन करते हुए केवल परिवहन किया है। न्यायालय ने इस कार्य के लिए 4 जनवरी की समयसीमा तय की थी और उसके पहले वहां कचरा पहुंचना चाहिये था। न्यायालय को 6 जनवरी तक इसकी रिपोर्ट अपेक्षित थी। इस कचरे को लेकर पिछले दिनों काफी बवाल मचा और पीथमपुर में आत्मदाह का प्रयास कर रहे दो लोग झुलस गये। आक्रोशित लोगों ने पुलिस पर पत्थर बरसाये और गाड़ियों में तोड़फोड़ की तो पुलिस को भी लाठियां भांजते हुए देखा गया और ट्राफिक जाम चारों तरफ कर दिया गया।

और यह भी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के चुनाव प्रचार का आगाज करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविन्द केजरीवाल पर जमकर निशाना साधा केजरीवाल पर तंज कसते हुए मोदी ने कहा कि मैंअपने लिए शीश महल बनवा सकता था लेकिन गरीबों के लिए चार करोड़ मकान बनाये। दिल्ली में आपदा सरकार है और ये कट्टर बेईमान लोग हैं। उल्लेखनीय है कि केजरीवाल अपने स्वयं व अपनी पार्टी के लोगों को कट्टर ईमानदार कहा करते थे लेकिन आबकारी घोटाले में आरोप लगने के बाद उन्हें जेल जाना पड़ा था और मोदी का यह कटाक्ष संभवतः इसी परिप्रेक्ष्य में था। चुनावी नारा देते हुए मोदी ने कहा कि आपदा को हटाना है और भाजपा को लाना है। दिल्ली में 4 हजार 500 करोड़ रुपए की की कई परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास भी मोदी ने किया। दिल्ली के अशोक विहार में बने 1675 फ्लैटस का भी प्रधानमंत्री ने उद्घाटन किया जो झुग्गीवासियों के लिए हैं।

इंदौर से प्रयागराज के लिए सीधी फ्लाइट 11 से

4 हजार 725 रुपए है किराया, इसी माह कुंभ के लिए स्पेशल ट्रेन भी चलेगी

इंदौर (नप्र)। इंदौर से प्रयागराज के लिए 11 जनवरी से सीधी फ्लाइट शुरू होगी। एलायंस एयर कंपनी इस फ्लाइट का संचालन करेगी। कंपनी इसे प्रयागराज कुंभ को देखते हुए शुरू कर रही है। एयरपोर्ट से मिली जानकारी के अनुसार एलायंस एयर की फ्लाइट नंबर 9आई342 हर शनिवार को इंदौर से शाम 8.05 बजे प्रयागराज के लिए रवाना होकर रात 10.05 बजे प्रयागराज पहुंचेगी। बता दें कि इंदौर से प्रयागराज के लिए पहले भी फ्लाइट का संचालन होता था जिसका संचालन विंटर शेड्यूल में बंद हो गया था। प्रयागराज से हर सोमवार को फ्लाइट संख्या 9आई340 शाम 7.40 बजे रवाना होकर रात 9.40 बजे इंदौर पहुंचेगी। एलायंस एयर कंपनी ने तीन कैटेगरी में इस फ्लाइट की बुकिंग शुरू कर दी है। पहली कैटेगरी सुपर सेवर है। इसका किराया 4 हजार 724 रुपए है। दूसरी वैल्यू कैटेगरी है। इसका किराया 12 हजार 074 रुपए है। वहीं तीसरी कैटेगरी फ्लैक्सिबल है। इसका किराया 20 हजार 999 रुपए है। बताया जा रहा है कि कंपनी इस फ्लाइट का संचालन एटीआर-72 से करेगी। एटीआर-72 में बैठने की क्षमता 48 से 78 सीटों तक होती है।

कुंभ मेले के लिए शुरू हो रही स्पेशल फ्लाइट– ट्रेवल एजेंट्स का कहना है कि जनवरी-फरवरी में प्रयागराज कुंभ मेले में देश-विदेश से लाखों लोग शामिल होने आएंगे। एयरलाइंस कंपनियां भी इसी को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवाओं में नए रूट जोड़ रही हैं। इंदौर के ट्रेवल एजेंट्स टीके जोश ने बताया कि इंदौर से प्रयागराज के लिए काफी इन्क्वायरी आ रही थी। इस रूट की काफी डिमांड थी। पहले भी इस रूट पर फ्लाइट का संचालन सफल रहा था, लेकिन बाद में इसे बंद कर दिया गया। फ्लाइट शुरू होने पर यात्रियों को काफी लाभ होगा। सूत्रों की माने तो इंदौर से प्रयागराज के लिए जल्द ही एक ओर फ्लाइट शुरू हो सकती है। इस फ्लाइट का संचालन इंडिगो कंपनी कर सकती है।

इंदौर में ड्रग्स के साथ पकड़ी गई 'लेडी डॉन'

निलंबित जेल प्रहरी के साथ राजस्थान से लाती थी, हाई-प्रोफाइल पार्टियों में डांस भी करती थी

इंदौर (नप्र)। इंदौर पुलिस ने ड्रग्स तस्करी के मामले में 20 साल की युवती श्रुति निषाद और उसके साथी निलंबित जेल प्रहरी दीपक यादव (37) को गिरफ्तार किया है। दोनों के पास से 20.30 ग्राम ब्राउन शुगर, 10.22 ग्राम एमडी ड्रग्स और एक होंडा अमेज कार जब्त की गई है। ड्रग्स की कीमत 10 लाख रुपए बताई जा रही है। मुखबिर की सूचना पर क्राइम ब्रांच ने शुक्रवार शाम एमआर-4 रोड पर घेराबंदी कर दोनों को पकड़ा है। दोनों राजस्थान से ड्रग्स लाकर इंदौर में सप्लाई करते थे। दोनों आरोपी पुलिस लिखी कार से ड्रग्स राजस्थान से लाते थे। इंदौर में सप्लाई करते थे। पुलिस के मुताबिक श्रुति को 'लेडी डॉन' के नाम से जाना जाता है। वह हाई प्रोफाइल पार्टियों में ड्रग्स सप्लाई के साथ डांस परफॉर्म भी करती थी। वह खुद भी नशे की आदी है। उस पर पहले से मारपीट और आर्म्स एक्ट के केस दर्ज हैं। पुलिस ने ड्रग्स तस्करी के आरोप में गिरफ्तार जेल प्रहरी के बारे में जेल विभाग को सूचित किया है।

निलंबित जेल प्रहरी पर है घरेलू हिंसा का केस– पुलिस ने बताया कि मॉडल विलेज कॉलोनी इंदौर निवासी आरोपी दीपक यादव आलीराजपुर में जेल प्रहरी था और लंबे समय से ड्यूटी से गायब था। इसके पहले देवास और इंदौर की सेंट्रल जेल में पदस्थ रह चुका है। उसे पिता की मौत के बाद 2009 में अनुकंपा नियुक्ति मिली है। दीपक पर उसकी पत्नी ने दहेज प्रताड़ना और घरेलू हिंसा का केस दर्ज कराया था। इसी के बाद उसे सस्पेंड किया गया। उससे पूछताछ की जा रही है कि उसका जेल में भी ड्रग्स सप्लाई का नेटवर्क तो नहीं है। दीपक के संबंध में जेल अधिकारियों को भी सूचना दी जा रही है।

लेडी डॉन और जेल प्रहरी ऐसे करीब आए– पुलिस के मुताबिक जेल विभाग से सस्पेंड होने के बाद दीपक यादव बाणगंगा इलाके में अपनी मौसी के यहां आकर रहने लगा। वह पुलिस की वर्दी पहने रहता था। उसे ड्रग्स की लत लग चुकी थी। इसी के चलते वह लेडी डॉन के संपर्क में आया। यहीं से दोनों मिलकर राजस्थान से ड्रग्स लाने लगे। इस ड्रग्स को वे खुद भी लेते और सप्लाई भी करते थे। पुलिस ने बताया कि दीपक ड्रग्स तस्करी के दौरान टोल नाका और पुलिस की चेकिंग के दौरान अपने आई कार्ड का इस्तेमाल करता था।

इंदौर के जूनियर चार्ली चैपलिन चौराहों पर संभाल रहे ट्रैफिक

अनूठी स्टाइल से समझा रहे हेलमेट और सीट बेल्ट के नियम

इंदौर (नप्र)। इंदौर में चल रहे ट्रैफिक मित्र अभियान में शहर के जूनियर चार्ली चैपलिन लोगों को अपने अलग अंदाज से ट्रैफिक नियमों का पाठ पढ़ा रहे हैं। वे शहर के प्रमुख चौराहों पर लोगों को उनकी जान की कीमत बताने के साथ हेलमेट पहनने और ट्रैफिक नियमों का पालन करने की अपील कर रहे हैं। हूबहू चार्ली चैपलिन की कॉपी करने वाले इस शख्स का नाम सुरेंद्र चौहान है। वे तीन साल से चार्ली चैपलिन की कॉपी कर रहे हैं। वे पेशे से पेंटिंग आर्टिस्ट है। हाल ही में वे इंदौर का ट्रैफिक संभालने के लिए सड़कों पर उतरे हैं। लोगों को समझाइश देने के साथ उनसे अपील कर रहे हैं कि ट्रैफिक सुधारने में मदद करें।ट्रैफिक सिग्नल रेड होने पर 1 मिनट में नियमों के पालन करने की समझाइश देते जूनियर चार्ली चैपलिन। जूनियर चार्ली चैपलिन ट्रैफिक सिग्नल लाल होने पर हेलमेट पहनकर वाहन चालकों के बीच पहुंचते हैं। उनके एक हाथ में छोटा लाउण्ड स्पीकर है जबकि दूसरे हाथ में रेडियम वाला डण्डा। हाल ही में उनका एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें उन्होंने रात में पीले रंग की ड्रेस पहनी है और इसी रंग का हेलमेट भी। ड्रेस भी गैलिस (शर्ट के आगे-पीछे कंधे से कमर तक लगे दो बेल्ट) वाली है। बीआरटीएस पर वे लाउडस्पीकर से बोलते हुए वाहन चालक के पास जाते हैं और पूछते हैं कि आपने हेलमेट क्यों नहीं पहना? अगर किसी कार चालक ने सीट बेल्ट पहना है तो उसके पास जाकर उसका आभार जताते हैं।

जनवरी के चौथे ही दिन पारा और चढ़ा, रातें सर्द

इंदौर में 10 सालों में पांचवीं बार इतना ज्यादा तापमान, दिन में ठण्ड का असर कम

इंदौर (नप्र)। इंदौर में जनवरी की शुरुआत में ही कंपकंपाने वाली ठण्ड के तेवर पिछले 24 घंटों में अचानक कम हो गए हैं। हालांकि ठण्डी हवाएं चल रही हैं लेकिन तापमान में इजाफा हुआ है। दिन का तापमान 3 डिग्री उछलकर 30.5 (+6) डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। यह सामान्य से 6 डिग्री ज्यादा है। जनवरी के 10 सालों में पांचवी बार ऐसा हुआ है जब तापमान 30 डिग्री से ज्यादा तक पहुंचा है। शनिवार सुबह हल्की ठण्ड रही जबकि विजिबिलिटी 1500 मीटर की थी। मौसम वैज्ञानिकों ने अभी ठण्ड से हल्की राहत के आसार जताए हैं। इसके पूर्व शुक्रवार रात के तापमान में हल्का इजाफा हुआ और 11.4 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। दरअसल शुक्रवार को दिन में हवा की रफ्तार 13 किमी प्रति घंटे की थी। साथ ही दिनभर धूप खिली होने के कारण ठण्ड का असर कम होता गया। फिर रात को ठण्ड का असर रहा। बीते 10 सालों में जनवरी में दिन का तापमान चार बार 30 डिग्री पार गया था। इसमें खास यह कि 3 जनवरी 2018 को (पहले हफ्ते में ही) दिन का तापमान 30.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। शनिवार को भी तापमान 30 डिग्री के करीब रहने का अनुमान है।

इंदौर में ओएलएक्स पर मोबाइल के जरिए ठगी

युवती से ही दुकान पर डिलीवरी कराई, व्यापारी से 95 हजार ऑनलाइन ट्रांसफर करा लिए

इंदौर (नप्र)। इंदौर के जेल रोड पर मोबाइल व्यापारी के साथ नए तरीके से ठगी का मामला सामने आया है। ठग ने ओएलएक्स पर बिकने के लिए डला मोबाइल शॉप पर भेजकर ऑनलाइन रुपए ट्रांसफर करवा लिए। विज्ञापन देने वाली युवती ने मोबाइल वापस मांगा तब व्यापारी को ठगी की जानकारी लगी। इसके बाद उन्होंने साइबर फ्रॉड की शिकायत की। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

एमजी रोड पुलिस ने कमलेश रामनानी की शिकायत पर दो लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया है। आरोपियों ने व्यापारी से करीब 95 हजार रुपए अकाउंट में ऑनलाइन डलवाए। इसके बाद व्यापारी के पास जो मोबाइल भेजा वह भी वापस ले लिया।

युवती से बोला भाई की दुकान पर दे दो मोबाइल– युवती ने बताया कि एक नंबर से कॉल आया। उसने बताया कि मोबाइल खरीदना चाहता है। मोबाइल सांई कलेक्शन पर देने के लिए कहा। उसने दुकान खुद के भाई की होने की बात कही थी। उसने कहा कि 1 लाख 25 हजार रुपए का पेमेंट दुकान से ही मिल जाएगा। इसके बाद युवक-युवती अपना मोबाइल लेकर चले गए। कमलेश ने तुरंत रुपए होल्ड करवाए। लेकिन बाद में उक्त रुपए अकाउंट से निकल गए।

इंदौर में आईआईटी स्टूडेंट ने की आत्महत्या

स्टेटस में लगाया सुसाइड नोट, लिखा– ऑनलाइन बेटिंग ऐप ड्रग्स जैसे ; भाई को हत्या की आशंका

इंदौर (नप्र)। इंदौर आईआईटी के बीटेक फर्स्ट ईयर के स्टूडेंट ने हॉस्टल के कमरे में फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घटना शुक्रवार रात की है। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा है। परिवार को भी सूचना दे दी गई है। पुलिस के मुताबिक मृतक रोहित पिता देवी सिंह केथवाथ (17) मूल रूप से तेलंगाना के नलगोंडा का रहने वाला था। ग्रामीण एएसपी रूपेश द्विवेदी के मुताबिक रोहित आईआईटी कैंपस के विक्रम साराभाई हॉस्टल में रहता था। दोस्तों ने बताया कि वह पहले ऑनलाइन गेम खेलता था। इसके बाद ऑनलाइन सट्टे की गिरफ्त में पड़ गया। इससे उसे लाखों रुपए का नुकसान हुआ। वह इस नुकसान से बाहर नहीं निकल पा रहा था। रोहित ने वॉट्सएप स्टेटस में सुसाइड नोट भी लिखा था। जिसमें उसने ऑनलाइन बेटिंग ऐप्स को ड्रग्स की तरह बताया। रोहित के बड़े भाई ने हत्या की आशंका जताते हुए जांच की मांग की है।

दोस्त डाइनिंग हॉल गए, रोहित फंदे पर झूला– पुलिस ने बताया कि शुक्रवार रात 8.30 बजे सभी दोस्त डिनर के लिए डाइनिंग हॉल गए थे। दोस्तों ने रोहित को भी साथ चलने के लिए कहा, लेकिन उसने मना कर दिया। डिनर के बाद दोस्त लौटे तो रोहित कमरे में फंदे पर लटका मिला। उन्होंने फौरन इसकी जानकारी हॉस्टल वार्डन और सिमरोल पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची। शव को फंदे से नीचे उतारा और पोस्टमॉर्टम के लिए जिला अस्पताल भिजवाया। परिजन के आने के बाद पोस्टमॉर्टम कराया जाएगा।

वॉट्सएप स्टेटस पर लिखा सुसाइड नोट– कमरे की सर्चिंग के दौरान पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। लेकिन मोबाइल खंगालने पर वॉट्सएप स्टेटस पर सुसाइड नोट था। जिसमें उसने अंग्रेजी में लिखा- मेरे सुसाइड के पीछे वजह ये है कि मैं ऑनलाइन बेटिंग गेम के लिए समर्पित हूं। अगर मेरे पेरेंट्स माफ सकते हैं तो भी मैं भविष्य में फिर वही काम करूंगा। क्योंकि ये ड्रग्स की तरह है। चलो देखते हैं...। सभी को गुड बाय।

कॉल डिटेल और मोबाइल ऐप की होगी जांच

पुलिस ने बताया कि कमरे की जांच के दौरान कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। मृतक का मोबाइल बरामद कर लिया गया है। उसके कॉल डिटेल और मोबाइल ऐप्स की जांच की जाएगी। अगर किसी तरह के लेन-देन की बात सामने आएगी तो उसकी भी पड़ताल करेंगे कि कोई उसे धमकी तो नहीं दे रहा था। बैंक अकाउंट की जांच कर पता लगाया जाएगा कि उसने किस-किसको पैसा ट्रांसफर किया। कहीं से लोन भी लिया था या नहीं।

9 जनवरी से शुरू होगा चार दिनी आईआईआईडी

इंदौर को मिलेगा इंटीरियर और आर्किटेक्चर के नए ट्रेंड्स का अनुभव

इंदौर (नप्र)। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इंटीरियर डिजाइनर्स (आईआईआईडी) द्वारा 9 से 12 जनवरी तक होटल शेरेटन ग्रेंड में एक ग्रैंड इवेंट 'शो केस' का आयोजन किया जाएगा। इस इवेंट में ईको फ्रेंडली और सस्टेनेबल डिजाइन पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इसमें 40,000 वर्ग फीट क्षेत्र में इंटीरियर और आर्किटेक्चर मटेरियल की एक्सिबिशन होगी, जिसमें 80 से ज्यादा स्टॉल होंगे। आईआईआईडी शो केस-2025 के चैयरपर्सन आर्किटेक्ट अभिषेक जुल्का ने बताया कि इस वर्ष की थीम 'सस्टेनेबिलिटी' है। इस इवेंट के माध्यम से लोगों को बेहतर डिजाइन और लाइफ स्टाइल के लिए प्रेरित किया जाएगा। इसके साथ ही, सस्टेनेबल और ईको फ्रेंडली प्रोडक्ट्स और मटेरियल से जुड़े इनोवेशन और नए प्रोडक्ट्स के बारे में जानकारी दी जाएगी। इस अवसर पर सस्टेनेबल मटेरियल के उपयोग पर वर्कशॉप का भी आयोजन किया जाएगा।

बाइक रैली से शुरुआत सूफी नाइट से समापन

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इंटीरियर डिजाइनर्स द्वारा आयोजित शो केस की शुरुआत 5 जनवरी को सुबह 8 बजे अवेयरनेस राइड से होगी। इसके बाद 9 जनवरी को सुबह 11 बजे पद्मश्री भूरी बाई शोकेस का उद्घाटन करेंगी। शाम 4 बजे इंटीरियर में सस्टेनेबल प्रैक्टिसेस पर पैनल डिस्कशन होगा और शाम 5 बजे आईआईआईडी के कैलंडर का विमोचन किया जाएगा। 10 जनवरी को सुबह 11 बजे आर. भाटिया द्वारा 'मिक्स्ड मीडिया का जादू' विषय पर कार्यशाला आयोजित होगी। दोपहर 2 बजे आर्किटेक्ट सी. एस. व्यवहारे के साथ 'मेरे मन के पैटर्न' पर इंटरेक्टिव सेशन होगा, जिसमें यंग डिजाइनर्स अपने काम को प्रस्तुत करेंगे। शाम 7 बजे आर्किटेक्ट मनीष बंकर का कीनोट प्रेजेंटेशन होगा। 11 जनवरी को ट्रेजर हंट, आर्किटेक्ट सुनील लाधा की 'आर्कटेक' कार्यशाला और पलक गुप्ता द्वारा अल्कोहल इंक आर्ट पर कार्यशाला होगी। 12 जनवरी को शाम 7 बजे सूफी नाइट के साथ शो केस का समापन समारोह होगा।

आर्टिस्ट गैलरी और किड्स फैशन शो की पहल– आईआईआईडी केस में विजिटर्स के लिए फूड कोर्ट्स भी होंगे। इसके अलावा, इंडियन ट्रेडिशनल और मॉडर्न आर्ट को एक साथ प्रस्तुत करने के लिए एक विशेष गैलरी बनाई जा रही है, जिसमें लोकल आर्टिस्ट अपने आर्ट वर्क को डिस्प्ले कर सकेंगे।

पुस्तक समीक्षा

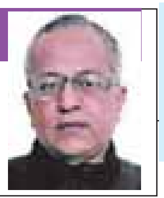

प्रमोद दीक्षित मलय

समीक्षक

शब्द-संधान : शब्दों के सम्यक् प्रयोग का विवेचन करती पुस्तक

शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, अपितु जीवन के संगीत और रचनात्मकता के राग का प्रतीक भी होते हैं। अर्थ की धरोहर लिए हुए ये शब्द न केवल लोक-चेतना को परिष्कृत करते हैं, बल्कि उसे परिमार्जित भी करते हैं। हम जानते हैं कि परस्पर पर्याय होने के बावजूद शब्दों के अर्थ में सूक्ष्म भिन्नताएँ होती हैं। यह भिन्नता, किसी शब्द के पद या वाक्य में सम्यक प्रयोग से पाठक के मन-मस्तिष्क में एक सजीव चित्र की भांति अर्थ का अंकन करती है। जहाँ उपयुक्त शब्द-प्रयोग रचना की गुणवत्ता को सरसता और प्रवाह के साथ पाठकों तक पहुँचाता है, वहीं अनुचित एवं अनुपयुक्त शब्द-प्रयोग न केवल अर्थ के प्रकटीकरण में बाधा डालता है, बल्कि कई बार हास्यास्पद स्थितियाँ भी उत्पन्न कर देता है।

लेखन में शब्दों के शुद्ध, सार्थक और उपयुक्त प्रयोग की आवश्यकता पर बल देती पुस्तक 'शब्द-संधान' इन दिनों साहित्य प्रेमियों और शब्द साधकों के बीच चर्चा का केंद्र बनी हुई है। यह कृति न केवल विद्वज्जनों, साहित्यिक मनीषियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए उपयोगी है, अपितु सामान्यजन के लिए भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। विशेष रूप से यह पुस्तक उन व्यक्तियों के लिए अपरिहार्य है, जिनका कार्य संवाद और संप्रेषण से जुड़ा है, जैसे- मीडिया कर्मी, राजनेता, वकील, रंगमंचीय कलाकार, उपदेशक, संत इत्यादि।

'शब्द-संधान' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि सार्थक अभिव्यक्ति और शुद्ध संप्रेषण की दिशा में एक मार्गदर्शिका है। पुस्तक की विषयवस्तु तीन खंडों में विभाजित है। खंड (क) शब्द-संधान, खंड (ख) शब्द-संधान के सूत्र तथा खंड (ग) शब्द-संकलन। प्रथम खंड में शब्दों के उचित प्रयोग पर 100 अध्यायों में विस्तृत विवेचन मिलता है। प्रत्येक अध्याय में समानार्थी, समानोच्चारित तथा लेखन एवं बोलचाल में सामान्यतः व्यवहृत ऐसे शब्दों को लिया गया है, जिनके प्रयोग में प्रायः त्रुटि होती है, जैसे- अनुदित और अनूदित, शैक्षिक और शैक्षणिक, सपत्नीक और सपत्नी; नृत्त और नृत्य, बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा और प्रतिभा, पुरुष और परुष; कठिन और कठोर, स्वागतम् और सुस्वागतम्, अनभिज्ञ, अभिज्ञ, अज्ञ, विज्ञ और ज्ञ, खोज, गवेषणा, शोध, आविष्कार और अनुसंधान, जयंती और जन्मोत्सव, सृजन और सर्जन का पेंच, कृति, कृत्ति और कृती, कोटि, श्रेणी और वर्ग, अनशन, उपवास, व्रत और भूख हड़ताल इत्यादि। इन सौ अध्यायों में सम्मिलित और विवेचित शब्द पाठक के सम्मुख उनकी पूरी अर्थवत्ता के साथ उपस्थित होते हैं, जिससे अर्थ एवं प्रयोग की दृष्टि से महीन अंतर भी सुस्पष्ट हो जाता है।

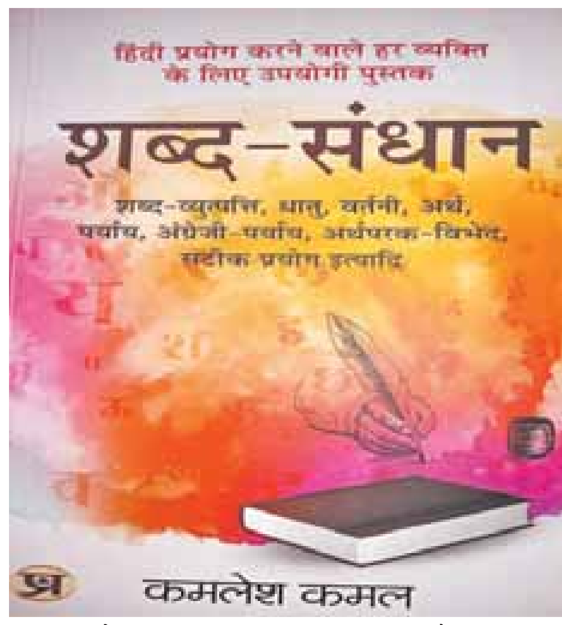

अनुभूत सत्य है कि न केवल लोकजीवन के परस्पर मौखिक संवाद में अथवा वार्ता के क्रम में, अपितु लेखन में भी साहित्यिकों द्वारा बहुधा त्रुटिपूर्ण शब्द व्यवहृत होते हैं, जिसके कारण व्यक्त भाव अनर्थकारी हो जाते हैं। उदाहरण के लिए- अर्थी और अरथी समानोच्चारित होने के बावजूद अर्थ में बड़ा अंतर रखते हैं। असावधानी या अज्ञानवश इनका अनुचित प्रयोग अर्थसिद्धि में समर्थ नहीं हो सकता, यह समझना चाहिए। विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि पाठक इन सौ अध्यायों से गुजरते हुए शब्द-सम्पदा अर्जित करता चलता है और भाषा-संवर्धन के प्रति उसका अनुराग भी बढ़ता जाता है। लेखक का मत है- 'सटीक अथवा समुपयुक्त शब्द-प्रयोग से ही किसी भाषा का प्राण-तत्व अक्षुण्ण रहता है।' निश्चित ही, शब्दों के साधु और सुसंगत सम्यक् प्रयोग एवं व्यवहार से ही भाषा की सम्प्रेषणीयता प्रभावी होती है और वह लालित्यपूर्ण एवं सहज प्रवाहमयी बनती है।

द्वितीय खंड (ख) के अंतर्गत आठ अध्याय जहाँ अपनी शब्द-सुवास से पाठकों के मन-मस्तिष्क को सुरभित करते हैं, वहीं बुद्धि के कपाट खोल अचम्भित भी करते हैं कि कैसे कुछ शब्द अपने सन्निहित अर्थ के विपर्यय अर्थ में प्रयुक्त हो, हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। उदाहरण के लिए, कृष्णा और सूर्या को ही लीजिए। बच्चों को बड़ों द्वारा लाड़-दुलार से पुकारे जाने वाले ये दोनों शब्द प्रायः हमारे पड़ोस में मिल जाते हैं। अभिभावकों को नहीं ज्ञात होता कि कृष्णा का अर्थ द्रौपदी है, कृष्ण नहीं। इसी तरह सूर्या, सूरज नहीं है; बल्कि उनकी पत्नी का नाम है। उपरोक्त तो अपने शुद्ध रूप 'उपर्युक्त' को बहुत पीछे धकेल लगभग हर शासकीय-विभागीय आदेश-पत्रों में महिमा मंडित हो रहा है। ऐसे ही पत्रों और रपटों में उल्लिखित 'दिनाँक' मानो भाषाविदों को चिढ़ा रहा हो, जिसे दिनांक होना चाहिए था। साम्यता, औदार्यता, सौंदर्यता, स्तनपान, गोकशी, समंदर, स्वादिष्ट, नवरात्रि, अभ्यारण्य, अंतर्ध्यान आदिक अशुद्ध शब्द जन-मानस में भाषिक सजगता की अपेक्षा करते हैं। इन आठ अध्यायों में लोकजीवन में कुछ बहु प्रचलित शब्दों तथा देशज-विदेशज शब्दों के निर्माण की वार्तनिक यात्रा अंकित है। अंतिम खंड (ग) में पर्यायवाची, विलोम तथा श्रुति-सम भिन्नार्थक शब्दों की विस्तृत सूची दी गई है जिसमें क से त्र वर्ण तक के 351 शब्दों के पर्यायवाची शब्द, 600 विलोम शब्द तथा 460 श्रुति-सम भिन्नार्थक शब्दों की सूचिका पाठकों के लिए शब्दों के अर्थ का विस्तृत फलक प्रदान करती हैं।

पुस्तक 'शब्द-संधान' पढ़ते हुए लगता है कि जैसे कोई शिक्षक अपने स्नेहपात्र विद्यार्थियों के सम्मुख शब्द-रचना के सूत्रों को चित्र-पट पर प्रकाशित कर रहा हो। मेरे पास हिंदी व्याकरण एवं शब्दकोश की एक दर्जन पुस्तकें होंगी; पर भाषाविद् एवं वैयाकरण कमलेश कमल की कृति 'शब्द-संधान' अपनी शोधपरक अंतः सामग्री, सम्यक् शब्द विवेचन एवं अर्थ-स्पष्टता तथा रुचिपूर्ण शैली के कारण मुझे अत्यंत महत्वपूर्ण लगती है। यह शब्दों के शुद्ध-अशुद्ध उलझाव का संजाल ऐसे काट देती है, जैसे घने बादल को प्रकाश की किरण। भाषिक-जटिलता का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती अनुपम कृति 'शब्द-संधान' विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं सामान्य पाठकों के लिए तो बहूपयोगी है ही, साथ ही लेखकों-संपादकों के लिए भी अत्यावश्यक और मार्गदर्शक है। मुझे विश्वास है, 'शब्द संधान' अपने ध्येय में सिद्ध हो शब्दानुशासन के नवल पथ की सर्जना कर भाषा संरक्षण एवं संवर्द्धन का रुचिर रसमय परिवेश रचेगी। आकर्षक कवर के साथ प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा दिसम्बर 2024 में प्रकाशित 'शब्द संधान' प्रकाशन के पूर्व ही ऑनलाइन प्लेटफार्म पर शीर्ष पुस्तकों में शुमार हो गई थी। नेचुरल शेड पीले कागज के 304 पृष्ठों में बिखरी शब्द-संपदा प्रत्येक परिवार में होनी चाहिए ताकि हिंदी भाषा के परिष्कार एवं समृद्धि की वेगवती धारा सतत प्रवाहमयी रहे।

कृति - शब्द-संधान
लेखक - कमलेश कमल
प्रकाशक - प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य - 500/-

कविता

आत्मग्लानि

ब्रजेश कानूनगो

अचानक चला गया
भुला दिया गया बूढ़ा योद्धा
अंधेरों के बीच प्रस्फुटित हैं स्मृति किरणें

भ्रम और आत्मगौरव की चकाचौंध से
अंधी हुई आँखें देख रही हैं अल्पपका अतीत
फ्लैशबैक की तरह

समझ, शिक्षा और जीवन मूल्यों का
एक निर्झर झरना प्रवाहित है सामने
विनम्रता, ईमानदारी, कर्मठता के फूल
खिले हैं चारो तरफ
कोई अट्टहास नहीं कर रहा
अहंकार से भरा
गंभीर प्रश्नों को मसखरी में उड़ा देने की
अश्लीलता दिखाई नहीं देती बहसों में

जब जीवित था किसी ने हंसाया कि
वह स्नानघर में बरसाती पहन कर नहाता था
हर आंदोलन का मैने समर्थन किया
जिसमे उसे सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी बताया गया
मुझे मजा आया जब प्रबुद्ध पत्रकार
उसे कठपुतली की उपमा दे कर खिलखिलाने
लगते थे

मुझे याद ही नहीं रहा उसका जतन
मंदी के महासागर से अपनी नौका को किनारे
लाने में कितना कुशल था वह
मैं कैसे भूल बैठा कि वह पारदर्शिता का मसीहा
था
तंत्र के घर्षण विकर्षण और उसके राज जानने
का
अधिकार उसी की सूझबूझ थी
गरीब लोगों की रोटी का इंतजाम
और काम मिलने का भरोसा
उसी की चाहत का नतीजा था

यह आश्चर्य ही है कि
जितना याद करता हूं अतीत को
वर्तमान शर्मसार होने लगता है
कल की मौत
घुलती जा रही आज के जीवन में

योद्धा को दी जाने वाली हर श्रद्धांजलि
लगता है जैसे मुझे दी गई है।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

विकास बिश्नोई

उड़ान

यह एक ठंडी सर्दियों की दोपहर थी। आसमान में धुंध छाई हुई थी, और ठंडी हवा ने पेड़ों की शाखाओं को बेजान कर दिया था। मां घर के दरवाजे पर खड़ी थीं, धूप की उम्मीद में। तभी, एक नाजुक तितली, जो शायद ठंड से जूझ रही थी, हल्के-हल्के अपने पंख फड़फड़ाती हुई उनके सामने आ गई।

मां ने जैसे ही दरवाजा खोला, तितली झिझकते हुए अंदर उड़ आई। उसके पंख कांप रहे थे, और वह कमजोर लग रही थी। तितली सीधा मां के हाथ पर आकर बैठ गई। मां की हथेली की हल्की गर्मी ने तितली को जैसे नई ऊर्जा दी। मां ने उसे बहुत प्यार से देखा और धीरे से कहा, 'तुम बहुत ठंडी हो गई हो, मेरी बच्ची।'

तितली जैसे उनकी बात समझ गई हो। उसने धीरे-धीरे अपने पंख फड़फड़ाए, मानो जवाब दे रही हो। मां ने तितली की तरफ देखते हुए उससे बातें करना शुरू कर दिया। उनके शब्दों में ऐसी ममता थी,

जैसे वह तितली को सुकून दे रही हों। तितली भी हर बार अपने पंख हिला कर मां की बात का जवाब देती रही। कुछ समय बाद, पिताजी घर लौटे। तितली ने मां की हथेली से उड़ान भरी और पिताजी के हाथ पर आकर बैठ गई। पिताजी ने मुस्कुराते हुए उसे देखा। उन्होंने भी उसे बड़े प्यार से अपनी हथेली पर रखा। कुछ पल के लिए तितली ने जैसे अपने नाजुक पंखों से उनकी उंगलियों को महसूस किया। फिर वह वापस मां के हाथ पर चली गई।

तितली की यह छोटी-सी उड़ान, मां और पिताजी के बीच, ऐसा लग रहा था जैसे वह अपनी नाजुकता और गर्मजोशी दोनों बांट रही हो। उसके पंखों की हलचल और उसकी मासूमियत ने घर के ठंडे माहौल में एक अद्भुत गर्मजोशी भर दी।

लेकिन धीरे-धीरे तितली की ऊर्जा कमजोर पड़ने लगी। उसके पंख अब पहले की तरह नहीं हिल रहे थे। कुछ देर बाद वह फिर से पिताजी की हथेली पर आकर बैठ गई। इस बार, उसकी नाजुक काया स्थिर हो गई।

मां और पिताजी ने चुपचाप एक-दूसरे को देखा। उनकी आंखों में एक गहरी उदासी थी। तितली का छोटा-सा जीवन समाप्त हो चुका था। लेकिन वह अपनी आखिरी घड़ियों में जो गर्मी और सुकून ढूंढ़ने आई थी, वह उसे यहां मिल चुका था।

हमने उसे घर के बगीचे में एक छोटे से गड्ढे में दफना दिया। तितली के लिए यह हमारी छोटी-सी श्रद्धांजलि थी। वह आई थी, हमारे घर की ठंड को अपनी नाजुकता से पिघलाने। उसका जाना यह सिखा गया कि जीवन में कुछ पल कितने मूल्यवान होते हैं।

मनन

बलदेव राज भारतीय

लेखक इतिहास प्रवक्ता हैं।

मन का विश्वास- है सबसे खास

यह समस्त जगत एक अबूझ पहेली का शिकार है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति के न केवल शक्ल सूरत भिन्न है, अपितु विचार भी भिन्न होते हैं। हर व्यक्ति के पास अपने विचारों को सही साबित करने के लिए पर्याप्त तर्क भी होते हैं। इतना कुछ होते हुए भी आप किसी के मन में बैठी हुई धारणाओं को अक्सर यकायक नहीं बदल सकते। अपने तर्कों का आधार देकर भी उसे उसकी मूल धारणाओं के विपरीत अपनी धारणाओं के पक्ष में नहीं कर सकते। एक नास्तिक व्यक्ति को आप अपने तर्क देकर आस्तिक नहीं कर सकते और इसी प्रकार एक आस्तिक व्यक्ति को नास्तिक नहीं किया जा सकता। इसे सरल शब्दों में कहा जाए तो संसार में प्रत्येक वस्तु या पदार्थ को आप जिस भी रूप में देखते या लेते हैं, वह आपके लिए वैसे ही गुण लेकर उपस्थित होती है।

एक पत्थर को ईश्वर मानने वाले के लिए वह पत्थर भी सकारात्मक फल देने लगता है। वह पत्थर उसके लिए सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत बन जाता है। यह ऊर्जा उसके तन और मन में विश्वास, शक्ति और आत्मसंतोष का संचार करती है। वहीं उस पत्थर को मात्र पत्थर मानने वाले के लिए वह साधारण पत्थर किसी काम का नहीं। वह उसे कोई विशेषवप्रभव नहीं देता। यह सब क्यों और कैसे होता है? मैं ऐसा नहीं मानता कि यह एक चमत्कार है। मैं नहीं मानता कि यह कोई अंधविश्वास या चमत्कार का परिणाम है। बल्कि ऐसा हमारे तन और मन की सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा के कारण होता है। जो व्यक्ति उस पत्थर को ईश्वर मानता है उसके तन मन में एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, जो उसे एक अद्भुत शक्ति प्रदान करता है। यह सकारात्मक ऊर्जा हमारे मन में दृढ़ता, आत्मविश्वास और एक अद्भुत शक्ति का निर्माण करती है। वहीं जो व्यक्ति मात्र उसे पत्थर समझता है उसकी नकारात्मक ऊर्जा उसके मन में नकारात्मक भावों यथा संदेह, असंतोष, और कमजोरी का संचार करती है।

मनुष्य का विश्वास उसकी सबसे बड़ी ताकत है। यह विश्वास किसी भी रूप में हो सकता है– ईश्वर, प्रकृति, या स्वयं में। जब कोई व्यक्ति अपने विश्वास के साथ पूर्णतः जुड़ता है, तो वह अपने भीतर एक अद्वितीय आत्मशक्ति का अनुभव करता है। यह शक्ति उसे कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी संघर्ष करने का साहस देती है।

एक साधारण किसान अपने खेत में बीज बोते समय ईश्वर से प्रार्थना करता है और विश्वास करता है कि उसकी मेहनत से और ईश्वर की कृपा से फसल अच्छी होगी। यह विश्वास उसे मानसिक शांति और धैर्य प्रदान करता है। वहीं, अगर उसके मन में यह विश्वास नहीं होगा कि उसकी मेहनत फल देगी, तो वह निराशा का शिकार होकर न तो खेतों में मेहनत कर पाएगा और न ही अपनी

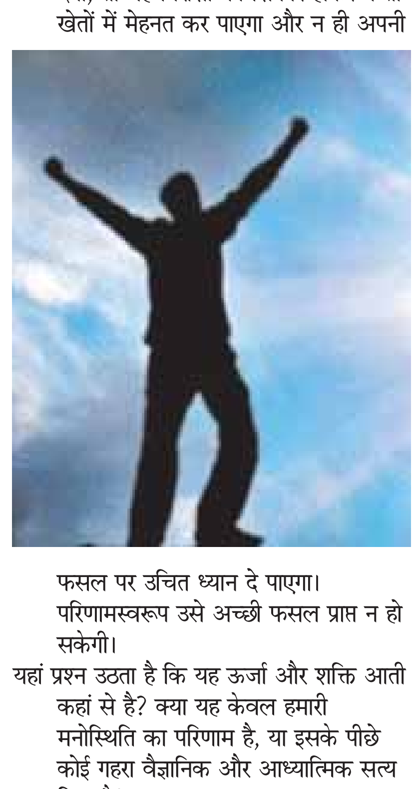

फसल पर उचित ध्यान दे पाएगा। परिणामस्वरूप उसे अच्छी फसल प्राप्त न हो सकेगी।

यहां प्रश्न उठता है कि यह ऊर्जा और शक्ति आती कहां से है? क्या यह केवल हमारी मनोस्थिति का परिणाम है, या इसके पीछे कोई गहरा वैज्ञानिक और आध्यात्मिक सत्य छिपा है?

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि हमारा शरीर शारीरिक और मानसिक क्रियाओं के प्रतिक्रिया स्वरूप नवरसों का स्राव करता है। यह नवरस ही हमारे लिए बहु उपयोगी होते हैं और इनका सही मात्रा में स्राव हमें विभिन्न प्रकार के रोगों से मुक्ति दिलाने और उपचार करने में सहायक होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, हमारा मस्तिष्क सकारात्मक और नकारात्मक ऊर्जा के प्रति संवेदनशील होता है। जब हम किसी चीज़ को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो हमारा मस्तिष्क 'डोपामिन' और 'एंडोर्फिन' जैसे रसायनों का स्राव करता है, जो हमें प्रसन्नचित्त और प्रेरित महसूस कराते हैं। वहीं नकारात्मक दृष्टिकोण 'कॉर्टिसोल' जैसे तनाव पैदा करने वाले रसायनों का स्राव करता है। जिससे हमारे शरीर का नाड़ीतंत्र प्रभावित होता है और अनेक रोगों के उत्पन्न होने का कारण बनता है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, हमारा मन और आत्मा ब्रह्मांडीय ऊर्जा से जुड़े हुए हैं। जब हम किसी चीज़ को श्रद्धा और विश्वास से देखते हैं, तो हम उस ऊर्जा से जुड़ जाते हैं। यह ऊर्जा हमारे भीतर सकारात्मकता और आनंद का संचार करती है। यही कारण है कि जब कोई व्यक्ति किसी मूर्ति, पत्थर, या प्रतीक को ईश्वर के रूप में पूजता है, तो वह उसके लिए एक शक्ति का स्रोत बन जाता है।

मनुष्य की धारणाएँ और ऊर्जा एक चक्र की तरह काम करती हैं। जब हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक होता है, तो यह हमारी ऊर्जा को बढ़ाता है। यह ऊर्जा हमें और अधिक सकारात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है, जो अंततः हमारे जीवन को सुखद बनाती है। वहीं, नकारात्मक दृष्टिकोण हमारी ऊर्जा को क्षीण करता है, जिससे हमारी सोच और कार्य भी प्रभावित होते हैं। इस चक्र को समझना और इसे अपने पक्ष में उपयोग करना ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य होना चाहिए। इसके लिए हमें अपनी सोच और दृष्टिकोण को सकारात्मक दिशा में मोड़ने की आवश्यकता है।

इस संसार में विश्वास और तर्क के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। किसी के विश्वास को चुनौती देना और उसे अपने तर्कों के आधार पर बदलने का प्रयास करना उचित नहीं है। इसके बजाय, हमें यह समझना चाहिए कि हर व्यक्ति की मान्यताएँ उसकी अपनी आंतरिक यात्रा का परिणाम हैं। सह-अस्तित्व का अर्थ है, विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों को स्वीकार करना। जब हम यह समझ जाते हैं कि हर व्यक्ति की सोच उसकी अपनी ऊर्जा और अनुभवों पर आधारित है, तो हम दूसरों के विश्वासों उसके विचारों का सम्मान करना सीख जाते हैं।

वैनिटी वैन का किस्सा

वक्रोक्ति

महेश कुमार केशरी

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जब से बी.पी.एस.सी. में धाँधली हुई है। और छात्र नेता प्रशांत किशोर जी धरने पर बैठे हुए हैं। तो सत्ता में काबिज और विपक्षियों की नींद उड़ी हुई है। सब लोग गाय को सरापने लगे हैं। लेकिन सरापने से गाय थोड़ी ही मरती है। यहाँ ये बताने की भी जरूरत है। कि जो गाय है दर असल वो गाय नहीं है। हर खाल में भेंडिया बैठा हुआ है। और जो कौआ आप देख रहे हैं। वो कौआ नहीं है। जो गाय को सराप रहा है। बल्कि वो रँगा हुआ सियार है। प्रसिद्ध कहावत है ना कि- 'बरबादे गुलिस्तां करने को एक ही उल्लू काफी है। अँजामे गुलिस्ता क्या होगा जब हर शाख पर उल्लू बैठे हैं।' तो यहाँ हर कोई कौआ है। माफ कीजियेगा गिद्ध है। सब जनता को नोंच खाना चाहते हैं। गाय सिर्फ जनता है। ये नया दौर है सोशल इंजीनियरिंग का। समाज और उसके लोगों के मानस को पढ़ने का। कुछ नया किया जाये। यह कहकर लोगों को बरगलाया जा रहा है। स्थितियाँ जस की तस हैं। सब लोग सब्ज बाग दिखा रहें हैं। हर राजनीताक चेहरे के पीछे भेंडिया छिपा है। सब भेंड़ों को ठंडी में कँबल मिलना है। उनके ही ऊन से। खैर;

यहाँ बात धाँधली पर नहीं हो रही है। लेकिन धाँधली की बात कोई नहीं करना चाहता। धाँधली से बड़े- बड़े मुद्दे इस देश में हैं। बाबड़ी और कुँए हैं। देश में जो रिफाइन और आटा मँहगा हो रहा है। इसकी बात लोग नहीं करते। डाटा भी मँहगा हो रहा है। आटा के बिना जैसे लोग नहीं रह सकते। वैसे ही लोग अब डाटा के बिना नहीं रह सकते। लोग, आटा, डाटा, तेल, रिफाइन और कॉपी - पेंसिल से आगे सोच ही नहीं पा रहा है। रोटी, कपड़ा और मकान के बाद अब डाटा भी आदमी की जरूरत बन गयी है। लेकिन सरकार के पास इसका कोई डाटा नहीं है। कि कितने लोगों को रोजगार किस साल मिला। किसान ने भरपेट खाया या नहीं। आखिर आम-आदमी इतना तनावग्रस्त क्यों है ?

इलीट होना इधर एक तरह से गुनाह सा हो गया है। जनता के ऊपर ये बात लागू नहीं होती। जनता की हालत तो कुछ ऐसी है कि बेचारी 'नहायेगी क्या और निचोड़ेगी क्या?' निचोड़ तो नेताजी और उनकी राजनीति रही है। सारी बातें जो लागू होती हैं। वो राजनीति में रँगे हुए सियारों के ऊपर लागू होती है। जो कौआ की शक्ल में गिद्ध हैं। गाय के भेष में लोमड़ी हैं। इलीट सब हैं। लेकिन इलीट होने या दिखना कोई नहीं चाहता। इलीट होना गर्मागर्म गुलाबजामुन को खाने सरीखा है। खाना सब चाहते हैं। लेकिन गर्म होने के चलते निगलने में परेशानी हो रही है। एक इलीटिया दूसरे इलीटिया पर यह आरोप लगा रहा हैं । कि तुम इलीट तो तुम इलीट। अभी इलीट होने का इल्जाम गाँधी मैदान पर अनशन में जुटे लोगों पर लगाया जा रहा है। जो विधार्थी हैं। जो लालटेन में अपना भविष्य फोड़ रहे हैं।

तुम इलीट की तुम इलीट। ये चारों दल के इलीटिया प्रवक्ता अपने - अपने दल का बचाव कर रहें है। कोई कहता है कि जो वैनिटी वैन है। वो चार करोड़ की है। कोई कहता है कि वैनिटी वैन का किराया पच्चीस हजार का है। जनता इनसे जानना चाहती है कि आपके कथनी और करनी में आखिर इतना फर्क क्यों है? चुनावों में जो आपका जो स्टेज बनता है, वो कितने में बनता है, पच्चीस हजार में । आप जो चौपर में घूमते हैं। क्या वो फोकट में बन जाता है। ये बात अलग है कि जिसने आपको सोशल इंजीनियरिंग करके राजनीति के पाठ सिखाये। वो आज आपके गले में हड्डी बन गया है। राजनिती का ऊँट किस करवट बैठेगा। कहा नहीं जा सकता। राजनीति का गुर जिसको सिखाया। वही उनको काटने को दौड़ा रहा है। कल तक जिसके गलबहियाँ डाले आप थकते नहीं थे। उससे उनकी सौतनडाह है। मीडिया भाँड बनी वैनिटी वैन का दाम जानना चाहती है। उसको इस बात की जानकारी चाहिए कि वैनिटी वैन में क्या है। मीडिया के छिछोरे लोग आम लोगों की जरूरत, परेशानियियों को टी. वी . पर नहीं दिखाते। छात्रों की समस्याओं से उनको कोई मतलब नहीं है। सब लोग सत्ता की चाटुकारिता में लगे हैं। उनके एजेंड़े में कुँए और बावड़ियाँ हैं।

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

नटराज की मूर्ति और भारतीय महिमा को दर्शाता चक्र

हमारा देश भारत, संस्कार एवं संस्कृतियों का देश भारत, प्राचीन से प्राचीनतम धरोहरों का देश भारत, अजंता, एलोरा जैसे थातियों का देश भारत। खजुराहो, कोणार्क, सारनाथ, सांची, नालंदा, काशी जैसे धरोहरों से संपन्न भारत। ऋषि, मुनियों, जड़ी-बूटियों का देश भारत। भारत जिसने कोविड काल में गिलोय, हल्दी सहित काढ़े के महत्व से सभी को चौका दिया। हाँ हम उसी संस्कृतियों के देश भारत की बात कर रहे हैं जिसे बार-बार आघात पहुँचाया गया, जिसके जड़ को नष्ट करने के तमाम प्रयास किए गए। भारत फिर भी अपने उन्हीं संस्कृतियों के साथ खड़ा रहा, कुछ अच्छा होनें के उम्मीद में खड़ा रहा, कोई तो होगा जो कदर करेगा इस उम्मीद में खड़ा रहा। भारत जिसके कला एवं संस्कृतियों पर आघात पहुँचा कर उस पर पाश्चात्य संस्कृति थोपने का प्रयास हुआ, जहाँ के संस्कारों को विपन्न बताया गया वही भारत आज अपने उन्हीं थातियों, कला, संस्कार एवं संस्कृतियों को विश्व के सामने प्रदर्शित कर अपने आज एवं प्राचीन से प्राचीनतम संपन्नता को दर्शाने में पूर्णतः सक्षम है और लोगों का ध्यान भी खींच रहा है। कुछ समय पूर्व भारत मंडपम में संपन्न हुए जी 20, जिसका थीम वसुधैव कुटुंबकम् था को पूरे विश्व ने देखा। वसुधैव कुटुंबकम् का मंत्र देने वाला देश भी भारत ही है। जी-20 के कार्यक्रम के फ्रेम में बार-बार आ रहे नटराज की मूर्ति, नालंदा, साबरमती आश्रम के प्रतिकृति के माध्यम से विश्व ने भारत को जाना, पहचाना, और गहराई से समझा। वहाँ प्रदर्शित नटराज की मूर्ति अष्टधातु से निर्मित और 27 फिट ऊँची है। नटराज भगवान शिव के सबसे महत्वपूर्ण रूपों में से एक है। यह मूर्ति तांडव मुद्रा को दर्शाती है। रौद्र तांडव करने वाले शिव रूद्र के रूप में पहचाने जाते हैं जबकि आनंद तांडव करने वाले शिव को नटराज कहा जाता है। नटराज की मूर्ति मनमोहक के साथ ही तमाम रहस्यों को खुद में समाहित किए हुए है। मूर्ति के चार भुजाएँ हैं। ऊपर उठे एक हाथ में डमरू है। डमरू सृजन को दर्शाता है जबकि दूसरे उठे हुए हाथ में अग्नि है जो विनाश को दर्शाता है। सृजन और संहार दोनों के परिचायक हैं नटराज। एक हाथ अभय मुद्रा अर्थात् आशीष की मुद्रा में है, साथ ही नृत्य मुद्रा को भी दर्शाता है जबकि नीचे की ओर झुका बाँया हाथ नृत्य के अधूरे मुद्रा को पूरा करता है साथ ही पैर की ओर इशारा करते हुए सभी के मोक्ष को भी दर्शाता है। नटराज मूर्ति सम्पूर्ण सृष्टि को परिभाषित करने में सक्षम है। नटराज मूर्ति सर्वोत्तम है। मूर्ति के चारों ओर वृत्त का घेरा है और घेरे पर क्रमबद्ध अग्नि जो ब्रह्माण्ड की बात को उजागर करता है। सर्पाकार लहरें कुंडलिनी को दिखाती हैं तो पाँव के नीचे दबा दानव अज्ञानता, अंधकार को दर्शाता है। फ्रेम में नालंदा जिसका अपना एक विशेष स्थान रहा है। शिक्षा का विशेष स्थान रहा है नालंदा, जहाँ से वैश्विक स्तर पर सम्पन्नता फैली है। इसी कड़ी में बात करते हैं चक्र की उसी चक्र की जिसकी प्रतिकृति के सामने जी 20 समिट में भाग लेने आए तमाम देशों के राष्ट्राध्यक्षों से भारत के प्रधानमंत्री ने हाथ मिला कर सभी का स्वागत किया और लोगों को कोणार्क के चक्र से परिचित करवाया, कोणार्क के बारे में समझाया। तस्वीरें खिंचवाईं। चक्र जिसकी महिमा जानते तो लगभग सभी

भारतीय हैं पर अब और जानने की अधीरता बढ़ गई है। भारत कलाओं का देश है, लोक कलाओं का देश है। भारतीय कृतियाँ वर्णनात्मक शैली पर अधिक हैं। भारतीय कृतियों के साथ कथानक होता है, इतिहास होता है, उसके होने की वजह होती है। कोणार्क के साथ भी कुछ ऐसा ही है। कोणार्क जिसके सिर्फ पहिए पर ही इतने गुण हैं कि गिनते अंगुली थक जाए तो पूरे मंदिर में क्या होगा सोचा जा सकता है। मंदिर 12 जोड़े पहिए वाले विशाल रथ के रूप में बना है जिसे सात विशाल घोड़े खींच रहे हैं, फिलहाल घोड़े खंडित अवस्था में हैं। दीवार पर उभरी हुई तमाम आकृतियाँ क्रमवार उकेरी गई हैं। आकृतियाँ एनॉटामी, लय, छंद से संपन्न हैं। मंदिर के हर स्पेश को आकृतियों से संतुलित करने का प्रयास किया गया है। पूरे मंदिर को इस तरीके से डिजाइन किया गया है कि लगता है घोड़े रथ को खींच रहे हैं और मंदिर रथ पर ही आसीन है। भ्रम की स्थिति है। भारतीय कला की जितनी भी विशेषताएं हैं, यहाँ पर सभी प्रदर्शित है। पशु, पक्षी, देव, मानव सभी का समन्वित रूप यहाँ पर दिखाई देता है। 13हवीं शताब्दी के मध्य राजा नरसिंह देव द्वारा निर्मित ओडिशा के कोणार्क में स्थित सूर्य मंदिर तमाम विशेषताओं से भरापुरा है। इसे काला पैगोडा के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय कला हमेशा से ही भावों, रेखाओं और उसके महत्व पर ध्यान देने वाली रही है। सभी कलाओं की अपनी विशेषता, उपयोगिता रही है। कोणार्क के सूर्य मंदिर की भी रही है जिसके शिखर को बहुत पहले उसके महत्व को कम करने हेतु हानि पहुँचाया गया पर उसका महत्व कोई क्या कम कर पायेगा? मंदिर प्रांगण में ही मानव के ऊपर हाथी उसके ऊपर शेर को दिखाया गया है जो मनुष्य के धनवान और समृद्ध होने के घमंड से मुक्त हो कर ही दर्शन की बात बताता है। बताता है कि किसी भी मंदिर में दर्शन के पूर्व तमाम विसंगतियों से खुद को मुक्त कर के ही अंदर जाना चाहिए। मंदिर में सात घोड़े हफ्ते के सात दिनों को दर्शाते हैं जबकि 12 पहिए महीनों को दिखाते हैं वहीं 12 जोड़े यानि 24 पहिए दिन के 24 घण्टों को दर्शाते हैं। रात दिन का भी इशारा पहिए में ही है। पहिए के केंद्र में हाथ लगाने पर बने हुए परछाई से हो रहे समय का पता लगाया जा सकता है। पहियों पर जबरदस्त नक्काशी का कार्य किया हुआ है। पहिए के अंदर आठ मोटी तथा आठ पतली तीलियाँ है। आठ मोटी तीलियाँ आठों पहर को दर्शाती हैं।

तीलियों पर 30 दाने 3-3 मिनट को दिखाते हैं। शंकर पार्वती, कृष्ण, राजा, नृत्य करती आकृतियाँ, कमल, घोड़े यानी पशु, पक्षी, नदी, पहाड़ सब की छोटी-छोटी आकृतियानं भी यहाँ की सुंदरता को बढ़ाती हैं।

कोणार्क या फिर भारत के किसी भी धरोहर को ध्यान से देखने पर भारत की संपन्नता, भारत के कलाकारों की संपन्नता, कृतियों के माध्यम से वैज्ञानिक प्रमाणिकता आदि आदि को देखा जा सकता है। भारत हर मामले में विशेष है। भारत के विशेषता को विश्व ने देखा अब जरूरत है कि भारत के लोग भी अपने धरोहरों, मान्यताओं पर विश्वास करें, उसे सहेजें और गर्व से आने वाली पीढ़ी को उसके बारे में समझाएं, सहेजने को कहें और कहें कि अपने पुरखों को, उनके किस्सों को शान से गाओ, खुद पर गर्व करना सीखो। विरासतों को नजदीक से निहारों, स्पर्श करते हुए उसके अपनेपन को महसूसो। हमारे पूर्वज कलाकारों के सृजन और परिश्रम को समझो उनके महत्व को जानों और अपने भीतर के भारतीयता से परिचित हो।

'घर के जोगी' पुस्तक रतलाम का साहित्य संदर्भ कोश

आयोजन

रतलाम। साहित्य, संस्कृति और सद्भाव के लिए पहचाने जाने वाले शहर रतलाम के साहित्य जगत को एकत्रित कर आलोचकीय दृष्टि से प्रस्तुत करती पुस्तक 'घर के जोगी' का विमोचन पद्मश्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी, कैलाश मंडलेकर, डॉ. जवाहर कर्नावट के हाथों हुआ। पुस्तक विमोचन करते हुए अतिथियों ने कहा कि आशीष दशोत्तर की यह पुस्तक रतलाम का साहित्य संदर्भ कोश साबित होगी।

पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. अज़हर हाशमी ने कहा कि यह श्रमसाध्य और समयसाध्य कार्य है। आशीष ने इसमें वैचारिकता की दूरदृष्टि का दूरबीन लगाकर छानबीन की है, तब यह संग्रह सामने आया है। इतने रचनाकारों के साहित्य को एकत्रित करना बहुत कठिन कार्य है। मेरे मत में यह अपने आप में एक रिसर्च है। इससे काफी लोग लाभान्वित होंगे और भविष्य में कई पीढ़ियां शोध कार्य में इसकी सहायता लेगी। यह पुस्तक संदर्भ कोश साबित होगी। यह रतलाम के साहित्य की डिक्शनरी भी है, कविता का कोश भी है और परिचय माला भी है। आशीष ने इस पुस्तक के माध्यम से समुद्र से से सुई निकालने का कार्य किया है।

प्रो. रतन चौहान ने कहा कि यह पुस्तक रतलाम के साहित्य जगत की पहचान है। इसमें आलोचकीय दृष्टि और रचनात्मक श्रम दिखाई देता है। इस पुस्तक के माध्यम से इतने रचनाकारों की रचनाओं को समेटकर आशीष ने अपने कवि दायित्व को पूरा किया है।

श्री सुरेश उपाध्याय ने कहा कि आलोचना की इस पुस्तक में आशीष ने एक अभिनव पहल की है, आज के संदर्भ में अपने शहर 'रतलाम' के ज्ञात, अल्पज्ञात व अज्ञात रचनाकारो के कविकर्म से वाबस्ता करने की महती कोशिश की है। किसी शहर की रचनाधर्मिता को लेकर मेरी जानकारी में यह प्रथम पहल है।

स्व. सुभाष दशोत्तर जी के अनुज डॉ.अरविन्द दशोत्तर ने कहा कि किताब को पढ़कर लगा सभी कुछ जीवन्त हो उठा। निश्चय ही बड़ा चुनौती भरा काम था। आशीष ने बहुत कुशलता से इसे पूरा किया है। बहुत से नए चेहरे लगा चित परिचित हैं। हर कवि को पाठकों से इतनी सहजता से मिलवाना, आशीष के ही बस का काम है।

डॉ. किसलय पंचोली ने कहा कि आशीष दशोत्तर द्वारा लिखित आलोचना की साझा पुस्तक 'घर के जोगी' में स्वयं की कविताओं को पढ़ पाना मुझे तिहरी खुशी से सराबोर कर गया। एक तो रतलाम से जुड़े आत्मीयता के तार झंकृत होने की खुशी, दूजे इस पुस्तक में शहर के पुराने और नए नामचीन कवियों के साथ मेरा अदना सा नाम जुड़ने की खुशी, तीसरे किसी ने मुझे कविता विधा से पहचान के घेरे में ला खड़ा किया है इस बात की खुशी। यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य आशीष ने किया है।

साहित्यकार रश्मि रमानी ने कहा कि रतलाम का एक विस्तृत फलक़ है। हर दशक में यहां से विभूतियां निकलीं हैं। रतलाम साहित्यकारों का गढ़ रहा है। बेहद खुशी होती है जब अपने घर के लोगों में हम भी शामिल हों। आशीष का यह कार्य रतलाम की पहचान बनेगा।

पुस्तक की विषय वस्तु और इसमें समाहित किए गए रचनाकारों की रचनाओं के प्रति निष्पक्ष रूप से आलोचकीय दृष्टि डालने के लिए अन्य सुधिजनों ने भी अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। इस अवसर पर विष्णु बैरागी, महावीर वर्मा, संजय परसाई 'सरल', नरेंद्र सिंह पंवार, नरेंद्र सिंह डोडिया, विनोद झालानी, कीर्ति शर्मा मौजूद थे।

बदले तो बदले जमाना... हम नहीं !

यह तो नहीं पता कि पीढ़ियों के नाम किस तरह रखे जाने लगे, लेकिन मालूम है कि 1900 से 1927 के दौर में पैदा को 'ग्रेटेस्ट जनरेशन' कहा जाता है। अब 2025 से 2039 तक 'जनरेशन बीटा' कहलाएगी। यह इंसानी इतिहास की पहली ऐसी पीढ़ी होगी, जो अर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आइ.) के दौर में पैदा होगी। पीढ़ियों के बीच मतभेद और नजरिए का फर्क तो हमेशा रहा है, लेकिन 'ग्रेटेस्ट जनरेशन' का वक्फा ही लंबा है, वरना पंद्रह साल में पीढ़ी बदल जाती है। पहले जिंदगी धीरे-धीरे बदल रही थी, जैसे गरमी की दोपहर और अब सर्दी के दिन गुजर जाते हैं। सोशल मीडिया पर उन चीजों की लिस्ट है, जो आज अहम हैं, लेकिन बीस साल पहले तक उनका कोई नाम-ओ-निशां नहीं था, जिसमें यू-ट्यूब और फेसबुक भी हैं! 'जनरेशन बीटा' की बात छोड़ें, 'जनरेशन अल्फा' को भी नहीं पता कि बिना टेक्नोलॉजी के दिन कैसे बीतते हैं।

❒ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

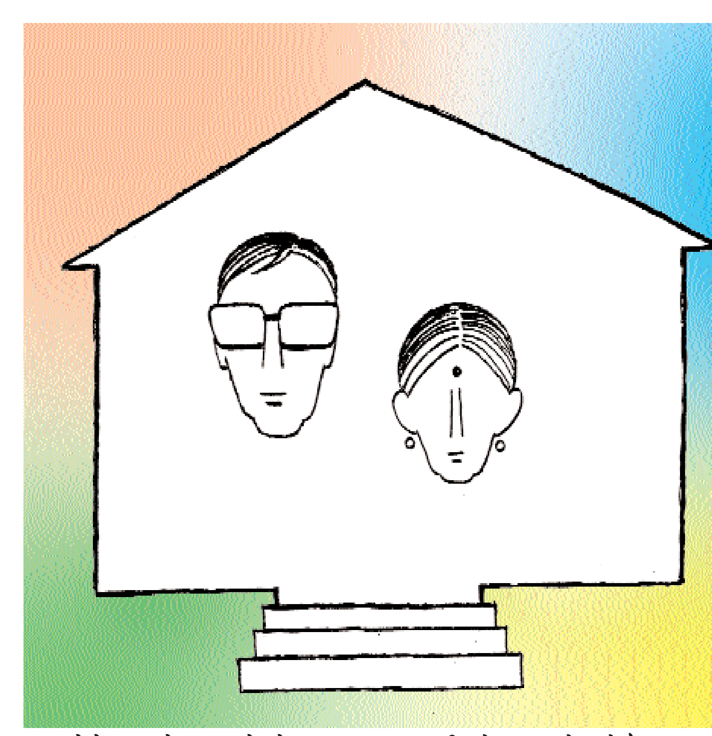

बुजुर्ग जोड़ा नब्बे के दशक में दाखिल होने को तैयार है। उस घर में कदम रखते ही एहसास होता है कि यह घर उस दौर का है, जिनकी तादाद तेजी से कम हो रही है। जब दोनों दरवाजे पर खड़े होकर हाथ हिला रहे थे तो आंखें नम हो गईं, क्योंकि बहुत मुमकिन है कि जिस तरह की जिंदगी ये जी रहे हैं, किस्से-कहानी बन जाएंगे। ये वही हैं, जिन्होंने जिंदगी भी देखी है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती और ये हैं, जिन्होंने नए दौर के लगभग हर अजूबे को देखा है। जिन्होंने खतों-किताबत के सहारे रिश्ते कायम रखे, क्योंकि आज जहां सम्पर्क और संवाद बनाए रखने के अनगिनत तरीके मौजूद हैं, तब भी न रिश्ते कायम हैं और न वैसे इंसान।

इंग्लिश कंट्री साइड पर छोटे-छोटे गांव और घर, जो किताबों, फिल्मों और बातचीत में नमूदार हो जाते हैं, अब अपना रंग भी खो रहे हैं, क्योंकि यहां भी टेक्नोलॉजी और मॉडर्न जिंदगी ने घर बना लिया है। अब कौन लकड़ी लाएगा और काटेगा, ताकि घर गरम रख सकें। अब घर भले ही बाहर से 1800 में बना हुआ हो, अंदर से वो कहीं से भी 2030 से कम का नहीं लगता।

नहीं पता कि 'जनरेशन बीटा' और उसके बाद आने वाली गामा और डेल्टा के सामने क्या नया पेश होगा, लेकिन इतना जरूर है कि 2025 से पहले की दुनिया अजूबा ही लगेगी। बस, इतनी उम्मीद करते हैं कि घर कैसे भी हों, नाम कुछ भी रखें लेकिन इंसानियत बरकरार रहे!

वेब सीरिज समीक्षा
आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

खोज : पहले फिल्म थी और अब हो गई वेब सीरिज

वर्ष 1989 में रिलीज हुई फिल्म 'खोज' और वेबसीरिज 'खोज-परछाइयों के उस पार', दोनों की कहानी एक ही है। एक बेचारा सा दिखने वाला पति अपनी पत्नी के गुम हो जाने की जानकारी देने पुलिस के पास आता है। उम्मीद यही कि पुलिसवाले लापता पत्नी को खोज दें। पुलिस कोशिश भी यही करती दिखती है। फिर पत्नी लौट आती है। लेकिन, ये समस्या का हल नहीं, उसकी शुरुआत है। पति का कहना है कि ये उसकी पत्नी है ही नहीं। तो जो पत्नी बनकर आई है, वह कौन है? और, अगर ये पत्नी नहीं है तो फिर असली पत्नी कहां है? दो लाइन के सूत्र के हिसाब से कहानी रोचक लग सकती है लेकिन दर्शकों ने न पैंतीस साल पहले वाली फिल्म 'खोज' को कोई तवज्जो दी थी और न ही वेबसिरीज़ -'खोज-परछाइयों के उस पार' में उनकी खास रुचि दिखा रहे हैं।

रामसे ब्रदर्स बोले तो डरावनी फिल्म बनाने वाले फिल्म निर्माता,इन की ही टीम के केशू रामसे ने पैंतीस साल पहले अपने परिवार की परम्परा से हटकर एक सस्पेंस थ्रिलर फिल्म बनाने की कोशिश की थी नाम था-'खोज', ऋषि कपूर और नसीरुद्दीन शाह जैसे नामी कलाकारों वाली इस फिल्म की कहानी भी वही थी जो इन दिनों ज़ी-फाइव पर प्रसारित वेबसिरीज़-'खोज - परछाइयों के उस पार' की है। बीस से पच्चीस मिनट के कुल जमा सात एपीसोड और सबकी कुल अवधि मिलाकर इतनी जितनी दो घण्टे बीस मिनट की एक आम फीचर फिल्म की इन दिनों होती है। शायद फिल्म के रूप में ही बनी होगी ये सीरिज, फिर इसे बनाने वालों ने इसे ज़ी फाइव पर प्रसारित करने के लिये वेबसीरिज़ रूप में प्रसारित करने का निर्णय लिया। उन्होंने सोचा होगा कि दर्शकों को कहाँ पता चलने वाला है कि यह फिल्म बनी थी या सीरिज? मगर अफसोस दर्शक अब सयाने हो गये हैं और वो ताड़ गये कि निर्माता ने क्या किया है ?

वर्ष 1989 में रिलीज हुई फिल्म 'खोज' और वेबसीरिज 'खोज-परछाइयों के उस पार', दोनों की कहानी एक ही है। एक बेचारा सा दिखने वाला पति अपनी पत्नी के गुम हो जाने की जानकारी देने पुलिस के पास आता है। उम्मीद यही कि पुलिसवाले लापता पत्नी को खोज दें। पुलिस कोशिश भी यही करती दिखती है। फिर पत्नी लौट आती है। लेकिन, ये समस्या का हल नहीं, उसकी शुरुआत है। पति का कहना है कि ये उसकी पत्नी है ही नहीं। तो जो पत्नी बनकर आई है, वह कौन है? और, अगर ये पत्नी नहीं है तो फिर असली पत्नी कहां है? दो लाइन के सूत्र के हिसाब से कहानी रोचक लग सकती है लेकिन दर्शकों ने न पैंतीस साल पहले वाली फिल्म 'खोज' को कोई तवज्जो दी थी और न ही वेब सीरिज़-'खोज-परछाइयों के उस पार' में उनकी खास रुचि दिखा रहे हैं।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है इस वेबसिरीज के कलाकार शारिब हाशमी और अनुप्रिया गोयनका अच्छे अभिनेता हैं। दोनों का अभिनय कुछ फिल्मों और कुछ सिरीज़ में दर्शकों को रुचिकर लगा भी था। लेकिन इस सीरिज में लगता है कि दोनों ने बस अपनी- अपनी फीस के एवज में यह काम कर दिया है। दोनों को देखकर कोई भी सामान्य दर्शक तक यह टिप्पणी कर सकता है कि दोनो बड़े बेमन से अपनी भूमिका निबाह रहे हैं।पुलिस अफसर के रोल में आमिर दलवी हैं। इस भूमिका को गढ़ा तो पंचगनी की 'चौकी' में तैनात पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में ही गया है,लेकिन भाषा,चाल चलन और बात करने का तरीका, इसका किसी हवलदार जैसा ही है। कहानी व चरित्र दोनों स्तर पर यह सिरीज़ पहले एपिसोड से ही विफल लगती है।

वेद, मीरा और अमोल साठे की इस कहानी में फिल्म 'खोज' देखकर वेबसीरिज 'खोज-परछाइयों के उस पार' के पटकथा और संवाद लेखक अजय दीप सिंह ने यहाँ वहाँ अपने स्तर से कुछ फेरबदल करने की कोशिश की है लेकिन, उपन्यास लेखक बनने की कोशिश में लगे कोतवाल की पुलिसिया कार्यप्रणाली देखकर सिर पटकने की इच्छा होती है। वेद की भूमिका में शारिब और मीरा की भूमिका में अनुप्रिया ऐसा कुछ खास करते नहीं है जो दर्शकों को बाँध सके। सब कुछ ठीक वैसे ही होता है जैसा कि हिन्दी सिनेमा के दर्शक इस सीरिज को देखते हुए सोचते हैं। शारिब ने इससे कहीं जटिल चरित्र अपने कैरियर में किए है लेकिन यहाँ उनको अपने निर्देशक और लेखक से कोई मदद नहीं मिलती। अनुप्रिया गोयनका के चरित्र के इर्द गिर्द बुना रहस्य इतना हल्का है कि कोई भी इसके आर पार देख सकता है। सिरीज़ की सिनेमैटोग्राफी और म्यूजिक में भी कुछ ऐसा नहीं है जिसके लिए ये सीरिज देखने की सिफारिश की जा सके।

निर्देशन का जहाँ तक प्रश्न है ,निर्देशक परेश बरुआ ने अतीत में -गली गली सिम सिम', गुटर गूं, सीआईडी और अदालत जैसे धारावाहिकों के निर्देशन में हाथ बँटाया है। वेबसीरिज के निर्देशन में भी टीवी सीरियल्स वाले फ्रेम ही ज्यादा नजर आते हैं। वह अपनी सीरिज को किसी लोकप्रिय जासूसी उपन्यास की तरह बनाने की कोशिश तो करते हैं और हर एपसोड के आखिर में कुछ न कुछ सस्पेंस भी लाने की कोशिश करते हैं लेकिन मुझे लगता है कि इसके हर एपीसोड से पहले एक वैधानिक चेतावनी जरूर होनी चाहिए कि ये सिरीज़ अपने जोखिम पर देखें। जी-फाइव के ग्राहक आप बन चुके हैं तो इसमें तो अब कुछ नहीं किया जा सकता लेकिन अगर आपको अपने वीकएंड के ढाई घण्टे बचाने हैं तो इस सिरीज को स्किप कर देने से भी ज्यादा कुछ जाएगा नहीं।

भ्रमित ना हो, पहले सही तथ्य जान लें, अफवाहों पर ध्यान ना दें : संभागायुक्त दीपक सिंह

पीथमपुर में जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों के साथ किया संवाद

धार। संभागायुक्त दीपक सिंह ने पीथमपुर नगर पालिका के सभागार में यहां के जनप्रतिनिधियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों और प्रबुद्ध नागरिकों से रामकी प्लांट में यूनियन कार्बाइड के कचरे के डिस्पोजेबल के संबंध में उठ रही भ्रांतियों पर चर्चा की। इसी दौरान मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के वीडियो संदेश को भी प्रदर्शित किया गया। संभागायुक्त का कहना था कि पीथमपुर मध्यप्रदेश ही नहीं देश का प्रमुख औद्योगिक केंद्र है। यहां की प्रगति के लिए शांति व्यवस्था अहम हैं। उन्होंने सभी से आग्रह किया है कि यूनियन कार्बाइड के कचरे के डिस्पोजेबल के संबंध में भ्रमित ना हो, पहले सही तथ्य जान लें, अफवाहों पर ध्यान नहीं दिया जाए। साथ ही इस पर लगाम भी लगाई जाए। मुख्यमंत्री जी का स्पष्ट कहना है कि सरकार जनकल्याण, जनहित और जनभावना का आदर करती है। न्यायालय के समक्ष यह विषय लाया जाएगा और न्यायालय के आदेश के परिपालन

में ही आगे की कार्यवाही की जाएगी। न्यायालय के निर्देश के परिपालन में यूनियन कार्बाइड का कचरा पीथमपुर पहुंचाने का कार्य किया गया है। सुरक्षा के मापदंड पर किसी भी बात का खतरा और डर का भाव जनता के बीच आया तो सरकार के माध्यम से यह विषय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

संभागायुक्त ने संवाद के दौरान सभी की बातों को ध्यानपूर्वक सुना। कहा कि आज हमने आईजी अनुराग , डीआईजी निमिष अग्रवाल, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार सिंह के साथ नगर का भ्रमण किया। जनजीवन पूर्णतः सामान्य है। हमने रामकी प्लांट भी जाकर देखा है। वहां पर यथास्थिति बनी हुई हैं। बैठक में चर्चा के बिंदुओं को लिपिबद्ध किया गया है और इसके साथ ही आप लोगों द्वारा उपलब्ध कराए गए दस्तावेजों से शासन को अवगत कराएंगे।

बैठक में आईजी अनुराग ने कहा कि कानून व्यवस्था को अपने हाथ में ना लें। आपकी सभी बातों से शासन को अवगत कराया जाएगा। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने कहा कि आप सभी जिम्मेदार है,अफवाहों का दौर न चले। इस बात का ध्यान रखे। रामकी प्लांट में यथास्थिति बरकरार है। इस बात को जन जन तक पहुंचाए और कानून व्यवस्था बनाए रखने में प्रशासन के मददगार बने। बैठक में नगरपालिका अध्यक्ष सेवंती पटेल भी मौजूद थीं।

धार के गंजीखाना स्थित विजयश्री खेड़ापति हनुमान मंदिर परिसर में चल रही भागवत कथा में कृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया

धार। धार के अति प्राचीन विजय श्री खेड़ापति हनुमान मंदिर गंजीखाना में श 11दिसंबर 2024 से अखंड रामायण पाठ चल रहा है इसी के अंतर्गत 31 दिसंबर से भागवत ज्ञान कथा का आयोजन भी किया जा रहा है। भव्य कलश यात्रा के साथ् 31 दिसंबर से शुरू हुई भागवत कथा मैं आज चौथे दिन कृष्ण जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ

मनाया गया । कथावाचक प. श्री कमल किशोर शर्मा द्वारा भागवत कथा का पाठ किया जा रहा है । मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं द्वारा बड़े हर्ष और उल्लास के साथ कृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया। कथा को सुनने बड़ी संख्या में श्रद्धालु विजयश्री खेड़ापति हनुमान मंदिर पहुंच रहे हैं । आयोजन में संत श्री धुलदास जी महाराज व श्री श्री 1008 श्री महंत श्री शांति दास जी महाराज का सानिध्य भी भक्तों को मिल रहा है । प्रतिदिन रात्री 9 बजे से कथास्थल पर सुमधुर भजनो का आयोजन् भी हो रहा है। 6 जनवरी को रामायण जी पाठ के समापन के साथ भागवत कथा के समापन अवसर पर विशाल संत सम्मेलन व नगर भंडारे का आयोजन भी समिति द्वारा किया जाएगा ।

स्व. शेषराव साबले का श्रद्धांजलि कार्यक्रम कल 6 जनवरी को

बैतूल। जिला मुख्यालय के समीपस्थ ग्राम दभेरी के रहने वाले तथा वर्तमान में चंद्रशेखर वार्ड बैतूल के निवासी, जिला सहकारी बैंक आठनेर शाखा प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त शेषरावजी साबले का गत 24 दिसंबर को बीमारी के चलते निधन हो गया था। उनके निधन से कुनबी समाज बैतूल सहित उनके परिचितों में शोक की लहर छा गई। श्री साबले अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र, दो पुत्रियां-दामाद एवं नाती-पोते से भरापूरा परिवार छोड़ गए। उनका तेरहवीं एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम सोमवार 6 जनवरी 2025 को दोपहर 12 बजे से कस्तूरी बाग, इटारसी रोड सदर बैतूल में रखा गया है। श्रद्धांजलि कार्यक्रम के लिए शोकाकुल परिवार में स्व. शेषराव साबले के ज्येष्ठ सुपुत्र सुनील साबले तथा कनिष्ठ सुपुत्र केशव साबले, भाई प्रहलाद रावजी साबले, भतीजा संदीप भोजराव साबले, गणेश साबले, मोहन साबले, गोपाल साबले, रमेश साबले, शिवशंकर साबले, नीलकंठ साबले ने सभी से श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शामिल होकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करने का आग्रह किया है।

भड़ूस स्कूल में करियर काउंसलिंग कार्यशाला आयोजित

बैतूल। शासकीय उमावि भड़ूस में करियर काउंसलिंग कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में श्रीमती ज्योति तिवारी द्वारा बच्चों की करियर काउंसलिंग की गई। श्रीमती तिवारी ने शाला में विधार्थियों को कैरियर योजना, कौशल आधारित रोजगार के महत्व, उच्च शिक्षा के विकल्प , विदेशों में पढ़ाई के लिए आवश्यक प्रक्रिया, प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी, छात्र उद्यमिता के बारे में संवाद, उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता के विकल्प, स्थानीय रोजगार के अवसर के बारे में विस्तार से बताया। प्रेजेंटेशन एवं ब्रोसर के माध्यम से काउंसलिंग सत्र को संवेदात्मक और रोचक बनाया गया। बच्चों को कक्षा 10 वी, 12 वी और उच्च शिक्षा के बाद सफलता के लिए मार्गदर्शन तथा विभिन्न सरकारी मेधावी विद्यार्थी स्कॉलरशिप योजनाओं की जानकारी दी गई।

महिलाओं ने सीखा गोबर से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने का हुनर

पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई त्रिशताब्दी समारोह समिति ने आयोजित किया प्रशिक्षण शिविर

बैतूल। पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी समारोह समिति द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से तीन दिवसीय गौ उत्पाद प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर किराड़ मंगल भवन में 3 जनवरी से 5 जनवरी तक आयोजित किया गया जिसमें प्रथम दिन लगभग एक सैकड़ा और द्वितीय दिन भी लगभग 150 महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस शिविर में महिलाओं को गोबर से सजावट का सामान, मूर्तियां, मोबाइल स्टैंड, मोमेंटो, माला सहित 70 से 80 प्रकार के उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षक के रूप में जीसीसीआई के अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षक जितेंद्र भकने और डॉक्टर भाग्यश्री भकने का सहयोग मिल रहा है। शिविर में महिलाओं ने उत्पाद निर्माण सीखा, इसे आजीविका के माध्यम के रूप में अपनाने की प्रेरणा भी प्राप्त की। महिलाओं ने इस शिविर को अपनी आजीविका और जीवन स्तर सुधारने की दिशा में एक प्रभावी कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह शिविर महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। इस आयोजन के मुख्य संयोजक गायत्री परिवार साउथ जोन के प्रभारी उत्तम राव गायकवाड स्वानंद गौ विज्ञान अनुसंधान केंद्र के संरक्षक और देवी अहिल्याबाई समिति के जिला संरक्षक कश्मीरी लाल बत्रा, जिला प्रभारी दीपेश मेहता, जिला अध्यक्ष जयश्री शाह, जिला सचिव वंदना कुंभारे, सहसचिव विजय हारोड़े, कोषाध्यक्ष विनय डोंगरे, नगर अध्यक्ष नरेश लहरपुरे, नगर सचिव भीम धोटे सहित समिति के समस्त जिला एवं नगर शामिल है। शिविर का उद्घाटन जन अभियान परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष मोहन नागर ने दीप प्रज्वलन कर किया। शिविर के समापन पर 5 जनवरी को सभी महिलाओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। स्वानंद गौ विज्ञान विवेकानंद विज्ञान अनुसंधान केंद्र के संचालक और अध्यक्ष डॉक्टर जितेंद्र भकने और डॉक्टर भाग्यश्री भकने का इस आयोजन में बहुमूल्य योगदान मिल रहा है। प्रशिक्षण ले रही बहनों ने कहा पुण्यश्लोक देवी अहिल्याबाई त्रिशताब्दी वर्ष के निमित्त तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर महिलाओं के जीवन में स्वावलंबन और सशक्तिकरण की नई किरण लेकर आया।

दो दिन और बढ़ा श्री अन्न मेला, आज की थीम रहेगी लोकल फॉर वोकल

उपस्थित अतिथि और नागरिकों ने श्री अन्न से बने व्यंजनों के स्वाद की तारीफ की

बैतूल। शिवाजी ऑडिटोरियम में लगाया गया श्री अन्न मिलेट्स मेला दो दिन और चलेगा। इस मेले में आम लोगों की सहभागिता और उत्साह के साथ ही यहां लगे स्टॉल पर क्रॉफ्ट सहित श्री अन्न से बने व्यंजन का स्वाद चखकर विधायक हेमंत खंडेलवाल ने इसे दो दिन और बढ़ाने की घोषणा की। इस मेले के उद्घाटन मौके पर विधायक खंडेलवाल ने कहा कि जिस तरह से यहां स्टॉल पर सामग्री नजर आ रही है और हमारी लोकल महिलाओं द्वारा उनका उत्पादन किया गया है, यह अद्भुत है। इन्हें बेहतर मार्केट उपलब्ध कराने और ब्रांडिंग के लिए प्रशासनिक स्तर पर भी प्रयास किए जाएंगे। वहीं नगर पालिका भी ऑडिटोरियम में जो दुकानें बनी है, वे इसी तरह के उत्पाद वाली महिलाओं को उपलब्ध कराई जाएगी। मेले में जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर का कहना था कि श्री अन्न हमारे क्लाइमेट के अनुरूप उपजा अन्न है। इस अन्न के सेवन से तमाम तरह की बीमारियों से भी बचाव होता है और व्यक्ति सेहतमंद रहता है, क्योंकि इसमें कई तरह के पोषक तत्व है। इस मेले में रागी, कोदो कुटकी, मक्का, ज्वार आदि से बने लड्डू, बर्फी, चीले, कटलेट, केक, चाउमीन, पास्ता आदि के स्टॉल लगे थे, जिन्हें लोगों ने खाकर देखा और इसके स्वाद की तारीफ की।

इस मेले का आयोजन प्रत्याशा संस्था नवांकुर मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद्, नगर पालिका परिषद बैतूल, महिला एवं बाल विकास विभाग बैतूल, कृषि विकास विभाग के सहयोग से किया गया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती पूजन एवं राष्ट्रगान से हुआ नटराज अकादमी ने गणेश वंदना पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में मोहन नागर उपाध्यक्ष मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद, बैतूल विधायक हेमन्त खण्डेलवाल, नगरपालिका अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, उपाध्यक्ष जिला पंचायत हंसराज धुर्वे, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कमला जोशी, जिला समन्वयक जन अभियान परिषद प्रिया चौधरी, वरिष्ठ पत्रकार सुनील द्विवेदी, वरिष्ठ अधिवक्ता संजय पप्पी शुक्ला, आशीष पचौरी प्रत्याशा संस्था से अध्यक्ष तूलिका पचौरी, निमिषा शुक्ला, तरुणा द्विवेदी, प्रमिला धोत्रे, हेमा सिंह चौहान, नेयुके जिला समन्वयक मोनिका चौधरी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक शैलेन्द्र बिहारिया ने किया। आज रविवार को मेले की थीम लोकल फॉर वोकल रखी गई है। मेले में विधायक हेमंत खंडेलवाल ने चाय का स्टॉल लगाने वाली सोनू उइके को ऑडिटोरिम में दुकान उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है। वहीं मेले में गमले का स्टॉल लगाने वाली दिव्यांग सरोज पारधी को ट्राइसिकल उपलब्ध कराने के भी निर्देश दिए है।

श्रेया शुक्ला का किया सम्मान- श्री अन्न मिलेट्स मेले में एंटरप्रेन्योर श्रेया शुक्ला को उनके लोकल फॉर ग्लोबल कान्सेप्ट और उसके तहत हेंडिक्राफ्ट कपड़ों के माध्यम से लोकल महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए अतिथियों द्वारा बैतूल शिखर सम्मान से सम्मानित किया। श्रेया शुक्ला को बैतूल की कपड़ों संबंधी कला को दुबई तक चर्चित किया है।

अन्न मिलेट्स मेले में साइबर सेल ने चलाया साइबर जागरूकता अभियान

बैतूल। अन्न मिलेट्स मेले में साइबर सेल द्वारा साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मेले में उपस्थित आमजन, बच्चों, युवतियों और अतिथियों को साइबर अपराधों से बचाव के उपायों और डिजिटल सुरक्षा के प्रति सजग करना था। साइबर सेल से एसआई नवीन सोनकर और दीपेंद्र सिंह ने सहभागिता की

और उपस्थित लोगों को साइबर अपराधों के बढ़ते खतरे और उनसे बचाव के तरीकों के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान की। साथ ही ऑनलाइन ठगी से बचाव के तरीके बताये। उन्होंने कहा कि अज्ञात लिंक पर क्लिक न करें। अपने बैंक खाते की जानकारी किसी के साथ साझा न करें। निजी जानकारी को सोशल मीडिया पर साझा करने से बचें। केवल भरोसेमंद लोगों को ही अपनी प्रोफ़ाइल तक पहुंच दें। ऑनलाइन खातों के लिए मजबूत और अद्वितीय पासवर्ड चुनें। फिशिंग ईमेल और कॉल्स से सतर्कता, संदिग्ध ईमेल, कॉल या संदेश का जवाब न दें। किसी भी साइबर अपराध के मामले में तुरंत हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें।

चंडी मंदिर से दर्शन कर टवेरा से वापस लौट रहे थे लोग

तेज रफ्तार टवेरा वाहन बेकाबू होकर मकान से टकराया, दो की मौत, तीन घायल

बैतूल। बैतूल-इंदौर हाईवे पर चिचोली थाना क्षेत्र अंतर्गत गोंडू मंडई के पास शुक्रवार रात एक टवेरा वाहन बेकाबू होकर मकान में घुस गया। इस हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई, जबकि 3 लोग घायल हैं। घायलों को चिचोली अस्पताल में भर्ती किया गया। सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पहुंची और स्थिति का जायजा लिया। टवेरा में सवार लोग चंडी मंदिर से दर्शन कर वापस लौट रहे थे। इसी दौरान यह हादसा हुआ। पुलिस सूत्रों से

मिली जानकारी के अनुसार चंडी मंदिर से कुछ श्रद्धालु दर्शन कर टवेरा वाहन से वापस लौट रहे थे, इसी दौरान यह तेज रफ्तार टवेरा वाहन अनियंत्रित होकर गोंडू मंडई के पास एक मकान में घुस गया। जिस वक्त यह हादसा हुआ, मकान में कुछ लोग बैठे हुए थे। इस हादसे में दयाराम पिता मानसिंह परते (45) निवासी ग्राम उमरिया थाना मोहगांव, जिला मंडला और टवेरा वाहन चालक माखन पिता ठाकुरदास (26) निवासी जर्रापुर (बुधनी) की भी मौत हो गई।

यह तीन लोग हुए घायल- हादसे में कृष्ण पिता देने जाटव (20 वर्ष) निवासी पीली खंती आनंद नगर जिला नर्मदापुरम, दीपाली पिता राम सरेआम (19 वर्ष) निवासी ग्राम सिंगारपुर तहसील गोगरी थाना मोहगांव जिला मंडला और गुलाब शाह पति राम सरेआम (35 वर्ष) निवासी ग्राम सिंगारपुर, तहसील गोगरी, थाना मोहगांव, जिला मंडला घायल हुए हैं। घायलों को तुरंत सीएससी चिचोली ले जाया गया। बताया जा रहा है कि घायलों में दो लोगों की हालत गंभीर होने पर उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। फिलहाल पुलिस घटना के संबंध में विस्तार से जांच कर रही है।

बैतूल-इंदौर हाईवे पर मिला अज्ञात व्यक्ति का शव

चेहरा और सिर कुचला होने से नहीं हुई शिनाख्त

बैतूल। बैतूल-इंदौर हाईवे पर शुक्रवार रात एक अज्ञात व्यक्ति का सिर कुचला शव मिला है। आशंका है कि व्यक्ति की मौत किसी बड़े वाहन से टकराने की वजह से हुई है। पुलिस मामला दर्ज कर आसपास के गांवों में मृतक की पहचान करने की कोशिश कर रही है। खेड़ी पुलिस चौकी प्रभारी सब इंस्पेक्टर राकेश सरेआम ने बताया कि शुक्रवार देर रात डायल हंड्रेड को एक व्यक्ति का शव इंदौर हाईवे पर पड़े होने की सूचना मिली थी। लाश महदगांव और डहरगांव के बीच हाईवे पर पड़ी थी। मृतक किसी भारी वाहन से टकराया है, जिससे उसका सिर और चेहरा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका है। इसकी वजह से उसकी पहचान कर पाना मुश्किल है। शव को शनिवार सुबह घटनास्थल से उठाकर जिला अस्पताल भेजा गया है, जहां पोस्टमॉर्टम करवाकर शव को मॉर्च्युरी में पहचान के लिए सुरक्षित रखा जाएगा। पुलिस का कहना है कि मृतक के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। आसपास के गांव खेड़ी, महदगांव और धनोरा में उसकी पहचान करने की कोशिश जारी है।

इधर यातायात पुलिस ने सड़क दुर्घटनाओं को रोकने ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर लगाए रेडियम रिफ्लेक्टर

बैतूल। सडक़ दुर्घटनाओं में कमी लाने के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक बैतूल निश्चल एन. झारिया द्वारा सभी थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया है। निर्देशों के तहत पुलिस द्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य मार्ग, और अन्य सडकों पर अधिक दुर्घटना वाले स्थानों की पहचान कर संबंधित निर्माण एजेंसियों से सुधार कार्य कराया जा रहा है। इन स्थानों पर संकेतक और अन्य आवश्यक सावधानी उपाय लागू किए जा रहे हैं।

कथाव्यास निर्मल शुक्ल ने किया बांग्लादेश में कथा की पहल का स्वागत

बैतूल। भारत के पांचवें धाम के रूप में विख्यात मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में स्थित श्री रूक्मणि बालाजी मंदिर बालाजीपुरम ने बांग्लादेश में भागवत कथा के माध्यम से शांति और सदभाव का अभियान आरंभ किया, तो यह पहल पूरे देश की मीडिया की सुर्खियां बन गई। इसके चलते भी उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी से आरंभ हो रहे महाकुंभ में भी बैतूल के बालाजीपुरम के इस अभियान की चर्चा है। इस संबंध में प्रयागराज में विशाल कथा आदि के लिए विराजित प्रसिध्द कथाकार पंडित निर्मल कुमार शुक्ल ने बताया कि बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने जिस तरह बांग्लादेश में हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाकर सद्भाव जागृत करने का प्रयास किया है, वह सराहनीय है। उनके व्दारा की दक्षिणा के रूप में एक करोड़ की घोषणा में महत्व पैसे का नहीं बल्कि सम्मान और सुरक्षा का है। पंडित शुक्ल ने कहा कि सभी प्रसिध्द और विद्वान कथाकारों को बालाजीपुरम के इस अभियान का समर्थन कर कथा के लिए पहल करनी चाहिए। जहां तक उनका सवाल है तो वो न सिर्फ बांग्लादेश अपितु पूरे विश्व में किसी भी देश में कथा करने को तैयार हैं। यजमान जहां भी उन्हें आमंत्रित करेगा, वो शांति-सदभाव और सम्मान की कथा सुनाने अवश्य जाएंगे। जब बालाजी महाराज उनके साथ हैं तो फिर डर किस बात का।

पंडित शुक्ल ने कहा कि इस संबंध में उनकी बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा से भी बात हुई और जल्द ही महाकुंभ में इस अभियान को चलाया जाएगा और कुंभ के बाद भारत व बांग्लादेश सरकार से बात कर हर हाल में भगवत कथा के प्रयास किए जाएंगे। इधर बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने पंडित निर्मल कुमार शुक्ल के इस अभियान से जुडने़ का स्वागत किया और कहा कि जब पंडित शुक्ल के समान विव्दान और ज्ञाता धर्मगुरू हिम्मत से सामने आता है तो बाकी कथाकारों को भी इस अभियान से जुडना़ चाहिए। आखिर सनातन का संदेश शांति और सद्भाव का संदेश है जो पूरी दुनिया में स्वीकार्य है। उन्होंने कहा कि इस महाकुंभ में यह अभियान हर धर्माचार्य के दरवाजे पर दस्तक देकर उनसे प्रत्येक सनातनी की सुरक्षा, सम्मान और समर्थन की बात उठाएगा।

भोपाल तिराहा की तीनों सड़कों का लेवल डूब नहीं, आजू-बाजू क्षेत्र डूब जरुर : पूर्व विधायक शर्मा

- **अवैध मिट्टी भराव पूरी तरह गलत- नपा नेता प्रतिपक्ष**

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

वार्ड नंबर 20, 22 और 23 के अंतर्गत आने वाले रसूलिया ग्राम क्षेत्र में डूब वाला वह हिस्सा (भोपाल तिराहा) इन दिनों आवासीय और व्यवसायिक ले-आउट विकास अनुमति के कारण खासी चर्चाओं में हैं। जहां 2023 में हजारों डम्फर मिट्टी अवैध रूप से भराव के बाद 2024 में जमीन से लगभग बीस फुट उपर कालोनी विकास की अनुमति प्रशासन ने जारी की है। नगर का यह हिस्सा डूब क्षेत्र में आता है यहां बरसाती पानी फैलकर निकासी के लिए सड़क स्तर तक दो बड़ी पुलिया लगभग बीस फुट के अंतर में बनी हुई है। बात 19 नंबर वार्ड पार्षद नगरपालिका में नेता प्रतिपक्ष अनोखेलाल राजौरिया बताते हैं वे सीधे कहते हैं यहां मिट्टी का भराव पूरी तरह गलत है। यह डूब है श्री राजौरिया यह भी बताते इस भराव के कारण इस क्षेत्र में पानी रुकेगा और नुकसान उपर कालिका नगर तक के

रिहायशियों को ही नहीं उठाना पड़ेगा.? बल्कि आदमगढ़, नर्मदा विहार, नारायण नगर, तिवारी कालोनी, पुलिस क्वार्टर भुगतना होगा। वार्ड नंबर 22 के पार्षद संतोष उपाध्याय भी डूब क्षेत्र में भराव के बाद आवासीय और व्यवसायिक ले-आउट विकास अनुमति दिया गया के पक्षधर नहीं, उनका कहना है कि डूब क्षेत्र में भराव नहीं होना चाहिए, पानी कहां जायेंगा। इस मामले में नपाध्यक्ष के पति एवं विधायक प्रतिनिधि महेंद्र यादव यह स्वीकारते हैं कि यह डूब है लेकिन टाउन एंड कंट्री विभाग ने कुछ क्षेत्र डूब से बाहर कर दिया है, फिर मुझे मालूम नहीं दिखवा लेता हूं कहकर फोन काट दिया। इस मामले की बारिकियों को लेकर पूर्व विधायक और विधानसभा चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार रहे गिरजा शंकर शर्मा का कहना है कि भोपाल तिराहा की तीनों सड़कों का लेवल डूब नहीं है। आजू-बाजू जरुर डूब क्षेत्र है। मिट्टी भराव से पानी अवरुद्ध होगा यह तकनीकी विभाग तय करेगा, तकनीकी विभाग के क्या नियम कायदे है उसे माना जाना चाहिए। उन्होंने इसके साथ ही बातचीत में यह भी जोड़ा निर्माण करने वाले अधिकांश हर जगह मिट्टी भराव कर निर्माण ऊंची जगह कर लेते हैं। पूर्व नगर कांग्रेस अध्यक्ष और प्रदेश उपाध्यक्ष पिछड़ा वर्ग कांग्रेस कमेटी अजय सैनी बेबाकी से कहते हैं हर आदमी ताकत बता रहा है, यहां भराव नहीं होना चाहिए, रहवासी बस्तियों में पानी भरायेगा, पानी रुकने से बाढ़ आयेगी और सरकार को मुआवजा देना होगा जो हमारे तुम्हारे टेक्स का ही पैसा होगा। बहरहाल भोपाल तिराहा पर 2023 में हजारों डम्फर अवैध मिट्टी डालकर की गई डूब क्षेत्र की भराई के मामले में प्रशासन को लाई गई अवैध मिट्टी के उत्खनन, परिवहन पर भूमि मालिक के विरुद्ध नियमानुसार दंडात्मक कार्यवाही, जुर्माना आदि कर मिट्टी राजसात कर अपने संवैधानिक पद गरिमा को बरकरार रखा जा सकता था जिससे अवैध कार्य करने वालों में डर और सरकारी संपत्ति की सुरक्षा के लिए तैनात प्रशासनिक अधिकारी संवैधानिक उत्तरदायित्वों के प्रति निष्ठावान नहीं होकर नियम विरुद्ध कार्य को संरक्षित कर आम जनजीवन प्रभावित करने की लकीर गाड़ी कर रहे हैं।

तमन्ना ने बॉयफ्रेंड के नाम का टैटू बनवाया !

तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा लगातार अपने रिलेशनशिप को लेकर सुर्खियों में हैं। दोनों ऑफिशियली अपने अफेयर की बात कबूल चुके हैं और यह दोनों अक्सर सोशल मीडिया पर एक-दूसरे पर प्यार लुटाते नजर भी आते हैं। माना जा रहा है कि तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा जल्द ही शादी रचाने वाले हैं। यह भी दावा किया जा रहा है कि यह दोनों साल 2025 में शादी रचाएंगे।

इंडस्ट्री में कई कपल्स हैं, जिनकी शादी का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। इनमें तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा भी हैं। दोनों लंबे वक्त से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। यह बात अलग है कि आज तक डेटिंग की खबरों पर बात सिर्फ विजय वर्मा ने की, तमन्ना ने कभी कुछ नहीं कहा। अब चर्चा है कि अगले साल यह कपल शादी के बंधन में बंध सकता है। अब पहली बार वेडिंग रूमर्स पर तमन्ना भाटिया ने रिएक्ट किया है। उन्होंने बताया कि वह विजय से शादी करेंगी या नहीं।

तमन्ना भाटिया और विजय वर्मा अगले साल 2025 में शादी करने की प्लानिंग कर रहे हैं। एक रिपोर्ट में दावा किया जा रहा है कि शादी को लेकर दोनों ने तैयारियां भी शुरू कर दी हैं। दोनों ही मुंबई में एक आलीशान अपार्टमेंट खोज रहे हैं, जहां दोनों अपने सपनों की शादी कर सकें। हालांकि इन खबरों पर कपल की तरफ से अभी तक

कोई पुष्टि नहीं की गई है। तमन्ना भाटिया के वर्कफ्रंट की बात करें तो एक्ट्रेस को आखिरी बार अमर कौशिक की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'स्त्री 2' में नजर आई थीं। इस फिल्म में उनका आइटम नंबर 'आज की रात' जबरदस्त हिट हुआ है। वहीं विजय वर्मा की बात की जाए तो वह नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज 'आईसी 814: द कंधार हाईजैक' में नजर आए थे।

इस बीच एक फोटो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है। इसमें विजय वर्मा एक महिला के साथ बैठे दिख रहे हैं, जिसके हाथ पर उनका नाम छपा है। फोटो में महिला का चेहरा तो नहीं दिख रहा, लेकिन इस तस्वीर को देखकर फैंस अटकलें लगा रहे हैं कि यह कोई और नहीं बल्कि तमन्ना भाटिया हैं। विजय वर्मा ने ये फोटो अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किए हैं। इन तस्वीरों में विजय जमकर मस्ती करते दिख रहे हैं। जैसे ही ये पोस्ट सामने आया, वह वायरल हो गया। इस फोटो को देखकर ज्यादातर फैंस का यही कहना है कि क्या तमन्ना ने अपने हाथ पर विजय के नाम का टैटू बनवाया है? लेकिन, बता दें कि ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। दरअसल इस फोटो में विजय वर्मा जिसके साथ नजर आ रहे हैं वह कोई महिला नहीं बल्कि पुरुष है, जिसका नाम वंश विरमानी है।

फोटोग्राफर वंश विरमानी ने अपने हाथ पर विजय वर्मा के नाम का टैटू गुदवाया है, जिसके साथ उन्होंने पोज दिए हैं। ऐसे में इस खबर में बिल्कुल भी सच्चाई नहीं है कि तमन्ना ने विजय के नाम का टैटू गुदवाया है। विजय वर्मा और तमन्ना भाटिया हाल ही में वेकेशन के लिए विदेश गए हैं, जहां से दोनों के फोटो जमकर वायरल हो रहे हैं. हाल ही में शादी की अटकलों को लेकर भी यह दोनों खूब सुर्खियां बटोर रहे हैं, हालांकि अभी तक ना तो विजय वर्मा और न तमन्ना की तरफ से शादी को लेकर कोई कन्फर्मेशन सामने आई है.

सुसाइड करना चाहता था ये डायरेक्टर

एक समय ऐसा था बॉलीवुड में मी टू के भूत ने सबको बुरी तरह डराया। महिलाओं ने खुलकर इस बारे में बात की और कई लोगों का पर्दाफाश कर दिया। हाल ये हो गए कि मी टू के आरोपियों का बॉलीवुड में टिक पाना ही मुश्किल हो गया। बॉलीवुड का एक डायरेक्टर तो ऐसा है जो ऐसे आरोप लगने के बाद अपनी जान देने के बारे में सोचने लगा था। बात कर रहे हैं बिग बॉस 16 स्टार और फराह खान के भाई साजिद खान की, जिन्होंने हाल ही में अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर कई चौंकाने वाले खुलासे किए हैं।

अपने अतीत के बारे में बात करते हुए साजिद खान ने कहा कि 6 साल पहले मैं अपनी जिंदगी खत्म करना चाहता था। मुझे इस बात का गम था कि

मेरे पास काम नहीं है। क्लीयरेंस मिलने के बाद भी मैं बेरोजगार था। मैं खुद को खड़ा करने की कोशिश कर रहा था। मैंने अपना घर बेचकर किराए पर रहना शुरू कर दिया। मेरे पास किराए के पैसे नहीं थे। मैं 14 साल की उम्र से काम कर रहा हूं क्योंकि पिता का देहांत हो गया था। हम कर्ज में थे। काश आज मेरी मां जिंदा होती तो वो मुझे मेहनत करते देखकर खुश होती। बेटा होने के नाते मैं उनका केयरटेकर बना, हमारी जिंदगी बहुत मुश्किलों से गुजरी है।

आगे साजिद खान ने कहा कि मैंने करियर की पीक पर जाकर बहुत गलतियां की। अब अपने पुराने इंटरव्यू देखकर मुझे गुस्सा आता है। दिल करता है कि खुद को बोलने से रोक दूं। मैंने बहुत लोगों के साथ बदतमीजी की। मुझे सच में सबसे माफी मांगनी चाहिए। मुझे समझ आया कि काम न होना आपकी जिंदगी तबाह कर सकता है। अब मैं केवल जिंदा रहने के लिए काम करना चाहता हूं। मीटू की वजह से लोग मेरी शक्ल नहीं देखना चाहते।

रियल बॉक्स

कुछ ने जीता दिल, कुछ गिरी धड़ाम से !

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हर व्यक्ति के लिए हर साल कुछ अलग होता है। जिस तरह घटनाएं अपने आपको नहीं दोहराती, वही स्थिति सिनेमा की भी है। यहां तक कि सिनेमा की दुनिया में भी हर साल उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। कभी दर्शक रिलीज हुई ज्यादातर फिल्मों को पसंद नहीं करते, पर बीता साल इस मामले में लकी रहा कि दर्शकों ने अधिकांश फिल्मों को सराहा। उनमें भी हॉरर-कॉमेडी और एक्शन फिल्मों का जलवा कुछ ज्यादा छाया। स्त्री-2, भूल भुलैया-3 और 'मुँज्या' के अलावा सिंघम अगेन, किल और 'फाइटर' जैसी फिल्मों को सराहा गया। साल खत्म होने से पहले 'पुष्पा-2' रिलीज हुई। अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया। इसने कई बड़ी फिल्मों के रिकॉर्ड ध्वस्त कर दिए और हिंदी सिनेमा की सबसे बड़ी ओपनिंग फिल्म बन गई। बॉक्स ऑफिस कलेक्शन के हिसाब से भी यह साल फिल्मों के लिए अच्छा कहा जा सकता है। लेकिन, कई बड़ी फ़िल्में फ्लॉप भी हुई। सबसे खास बात यह रही कि बीते बरस बड़े सितारों का जादू दर्शकों के सिर चढ़कर नहीं बोला, बल्कि राजकुमार राव और कार्तिक आर्यन की फिल्मों के अच्छी कमाई की। अक्षय कुमार की फिल्मों के फ्लॉप होने का सिलसिला इस साल भी जारी रहा। अजय देवगन भी दर्शकों को प्रभावित करने में नाकाम ही रहे।

कहा जा सकता है कि फिल्म इंडस्ट्री के लिए साल 2024 बीते सालों के मुकाबले बेहतर रहा। ऐसी कई फिल्में आई, जिसे दर्शकों ने पसंद किया। लेकिन, कुछ फिल्में ऐसी भी हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर खास कमाई नहीं की, लेकिन उनकी कहानी ने लोगों को प्रभावित किया। इस लिस्ट में किरण राव के डायरेक्शन में बनी 'लापता लेडीज' भी है, जिसे भारत की तरफ से ऑस्कर में भेजा गया है। यह जिक्र उन फिल्मों का जो सुपरहिट रही। ऐसी फिल्मों में '2-स्त्री' अव्वल रही, जिसमें श्रद्धा कपूर, राजकुमार राव, पंकज त्रिपाठी ने काम किया। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर छाई रही और बॉक्स ऑफिस पर वर्ल्ड वाइड 858 करोड़ का कलेक्शन किया। 'भूल भुलैया-3' दिवाली के मौके पर रिलीज हुई थी। 150 करोड़ में बनी इस फिल्म का वर्ल्ड वाइड ग्रॉस कलेक्शन 396.7 करोड़ बताया गया। फिल्म का घरेलू कलेक्शन 260.7 करोड़ है। कार्तिक आर्यन की इस फिल्म ने कलेक्शन के मामले में 'सिंघम अगेन' को भी पीछे छोड़ दिया।

प्रभास, दीपिका पादुकोण और अमिताभ बच्चन की फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' भी बॉक्स ऑफिस पर हिट हुई। फिल्म को दर्शकों ने पसंद किया। कलेक्शन की बात करें तो बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने 378.4 करोड़ का वर्ल्ड वाइड कलेक्शन किया। विजय सेतुपति की फिल्म 'महाराजा' कुछ अलग तरह की फिल्म रही, जिसमें सस्पेंस और थ्रिलर है। फिल्म की कहानी ने दर्शकों को बांध दिया था। अजय देवगन और आर माधवन की 'शैतान' भी हिट रही। इस हॉरर फिल्म को पसंद किया गया। फिल्म ने कलेक्शन भी अच्छा किया था और सिनेमाघरों में टिकी रही। इस लिस्ट में किरण राव के डायरेक्शन में बनी फिल्म 'लापता लेडीज' को भूला नहीं जा सकता। 'लापता लेडीज' में ज्यादातर नए कलाकार हैं, पर फिल्म के कथानक ने दर्शकों को बांधकर रखा। फिल्म की कहानी इतनी दमदार थी कि दर्शकों को वो अपने आसपास की घटना लगी। यह ओटीटी की सबसे ज्यादा देखने वाली फिल्म तो बनी, इसका वर्ल्ड वाइड कलेक्शन तो बेहद सीमित 27.06 करोड़ रहा। वहीं घरेलू कलेक्शन भी 20.58 करोड़ रहा।

साल की शुरुआत में आई ऋतिक रोशन, दीपिका पादुकोण और अनिल कपूर की फिल्म 'फाइटर' को देखने वालों ने पसंद किया। लंबे समय से दर्शक ऋतिक और दीपिका की जोड़ी को देखने का इंतजार कर रहे थे। बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने 355.4 करोड़ का वर्ल्ड वाइड ग्रॉस कलेक्शन किया है। मल्टी स्टार फिल्म 'सिंघम अगेन' देखने वालों को अच्छी तो लगी, लेकिन यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अपेक्षा के अनुरूप कलेक्शन नहीं कर सकी। पर, फिल्म ने हंसाया बहुत। रणवीर सिंह की एक्टिंग की अच्छी तारीफ हुई। उनकी परफॉर्मेंस से लोग बहुत प्रभावित हुए। राघव जुयाल और लक्ष्य की एक्शन फिल्म 'किल' में जबरदस्त मारधाड़ दिखाई गई। फिल्म की कहानी एक ट्रेन की थी, जिसमें बहुत खून खराबा होता है। इस लिस्ट की आखिरी फिल्म 'मंजुमेल बॉयज' एक सच्ची घटना पर आधारित है। ये तमिलनाडु के जंगलों में गुना केव्स की सच्ची घटना है। ये मलयालम फिल्म है, जिसे ओटीटी पर डब किया गया है। इसके अलावा 'देवरा-1' ने 443.8 करोड़ का वर्ल्ड वाइड ग्रॉस कलेक्शन किया।

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के लिए साल संतोषजनक कहा जाएगा। कुछ बड़े बजट की फिल्में बॉक्स ऑफिस पर

फ्लॉप साबित हुई, तो कुछ कम बजट की फिल्मों ने धमाल मचाया। हॉरर-कॉमेडी वाली फिल्मों को दर्शकों ने बहुत पसंद किया। पसंद भी इतना किया गया कि बॉक्स ऑफिस पर भी इन फिल्मों ने अच्छी कमाई की। 'मुंज्या' इस साल के शुरू में आई, जिसे देखकर हर दर्शक प्रभावित हुआ। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर इतना धमाल मचाया कि दर्शक चौंक गए। 'मुंज्या' ने बॉक्स ऑफिस पर 132 करोड़ का कलेक्शन किया। जबकि, फिल्म का बजट 30 करोड़ के आसपास रहा।

श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की फिल्म 'स्त्री-2' अगस्त में रिलीज हुई। फिल्म के साथ दो और बड़ी फिल्में आईं थीं। 'स्त्री-2' ने दोनों बड़ी फिल्मों को पटखनी देकर बॉक्स ऑफिस पर धमाल कर दिया। 'स्त्री-2' साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्मों में से एक है। इस फिल्म ने वर्ल्ड वाइड 840 करोड़ का कलेक्शन किया। जबकि, फिल्म की लागत 50 करोड़ थी। ऐसी फिल्मों में कार्तिक आर्यन की 'भूल भुलैया-3' ने भी रंग जमाया। ये फिल्म दर्शकों को डराने के साथ हंसाती भी है। 'भूल भुलैया-3' का बजट 150 करोड़ था और इसने बॉक्स ऑफिस पर 450 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन किया। सोनाक्षी सिन्हा के डबल रोल वाली फिल्म 'काकुड़ा' ओटीटी पर रिलीज हुई थी। हॉरर कॉमेडी पसंद करने वालों के लिए ये अच्छी फिल्म रही।

फिल्मों के अलावा कलाकारों के लिए भी यह साल बेहतरीन साबित हुआ। लोगों ने कई कलाकारों के अभिनय को सराहा। इस साल अपनी अदाकारी से लोगों का दिल जीतने वाले कलाकारों का जिक्र किया जाए तो राजकुमार राव का नाम ही सबसे पहले आता है। यह साल इस अभिनेता के लिए सफल साबित हुआ। इस साल उनकी कई फ़िल्में सुपरहिट रही। राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर की 'स्त्री-2' को दर्शकों का जबरदस्त प्यार मिला। फिल्म ने रिकॉर्ड तोड़ कमाई की। फिल्म में पंकज त्रिपाठी के अभिनय को भी पसंद किया गया। इस फिल्म ने उन्हें बॉक्स ऑफिस का महाराजा बना दिया।

राजकुमार राव की हिट फिल्मों में 'श्रीकांत' भी है, जो मई में रिलीज हुई। इसमें राजकुमार ने एक दृष्टिहीन का किरदार निभाया है। इस फिल्म को अच्छी सफलता भी मिली। फिल्म ने 50.05 करोड़ का कलेक्शन किया। उनकी फिल्म 'विक्की विद्या का वो वाला वीडियो' फिल्म रिलीज हुई। इसमें उनके साथ तृप्ति डिमरी को देखा गया। इस कॉमेडी फिल्म की कहानी को दर्शकों ने पसंद किया, पर फिल्म चली नहीं। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर सिर्फ 41.93 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया। राजकुमार राव और जाह्नवी कपूर की फिल्म 'मिस्टर एंड मिसेज माही' का नाम भी इस सूची में है। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 36.28 करोड़ का कलेक्शन किया। जाह्नवी और राजकुमार की जोड़ी को भी दर्शकों ने पसंद किया, पर फिल्म बॉक्स ऑफिस पर जलवा नहीं दिखा।

इस साल कई बड़े बजट वाली और बड़े कलाकारों की फ़िल्में आईं। लेकिन, कई फ़िल्में उम्मीद के मुताबिक बॉक्स ऑफ़िस कमाल नहीं कर सकी और न दर्शकों पर खास प्रभाव नहीं छोड़ सकी। आलिया भट्ट की फ़िल्म 'जिगरा' से लेकर कार्तिक आर्यन की चंदू चैंपियन, विक्की विद्या का वो वाला वीडियो समेत कई फिल्में हैं, जिन्होंने दर्शकों पर असर नहीं छोड़ा और इस वजह से बॉक्स ऑफिस पर भी फ्लॉप रही। आलिया भट्ट की फिल्म 'जिगरा' में भाई-बहन का प्रेम दिखाया गया। लेकिन, फिल्म बॉक्स ऑफिस पर असर नहीं दिखा सकी। इसका बॉक्स ऑफ़िस कलेक्शनः मात्र 55.05 करोड़ रुपए ही रहा। अक्षय कुमार, टाइगर श्रॉफ की फिल्म 'बड़े मियां छोटे मियां' भी उन फिल्मों में शामिल है जिसे दर्शकों ने नापसंद किया। फिल्म का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन भी 102.16 करोड़ रुपए रहा। पैरालंपिक में भारत को पहला गोल्ड मेडल दिलाने वाले मुरलीकांत पेटकर की जीवनी पर आधारित फिल्म 'चंदू चैंपियन' भी नहीं चली। कार्तिक आर्यन की इस फिल्म ने 88.14 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया!

इंडियन फुटबॉल टीम के मैनेजर और कोच सैयद अब्दुल रहीम की रियल लाइफ आधारित फिल्म 'मैदान' भी उम्मीद पर खरी नहीं उतरी। सैयद अब्दुल रहीम को इंडियन फुटबॉल का आर्किटेक्ट माना जाता है। इसमें अजय देवगन की मुख्य भूमिका है। फिल्म का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 71 करोड़ रुपए ही रहा! 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट 814 और भारतीय इतिहास में अन्य हवाई जहाज अपहरण ने फिल्म 'योद्धा' के लिए प्रेरणा का काम किया। सिद्धार्थ मल्होत्रा, राशि खन्ना और दिशा पटानी मुख्य कलाकार है। 'योद्धा' ने बॉक्स ऑफिस पर सिर्फ 35.56 करोड़ रुपए कमाए। शाहिद कपूर और कृति सेनन की फिल्म 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' इंजीनियर और रोबोट की प्रेम कहानी है। फिल्म को दर्शकों से ज्यादा प्यार नहीं मिला और 85.16 करोड़ रुपए पर बॉक्स ऑफिस कलेक्शन सिमट गया। राजकुमार राव और जाह्नवी कपूर की फिल्म 'मिस्टर और मिसेज माही' क्रिकेट के जुनून पर आधारित फिल्म है ,पर फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर पटखनी खा गई। फिल्म ने सिर्फ 35.55 करोड़ रुपए कमाए! राजकुमार राव और तृप्ति डिमरी की फिल्म 'विक्की विद्या का वो वाला वीडियो' में कॉमेडी जरूर थी लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर पूरी तरह फ्लॉप रही।

फिल्मों के दर्शक अब ओटीटी तरफ भी जाने लगे हैं और इसका सबसे बड़ा प्रमाण है संजय लीला भंसाली की वेब सीरीज 'हीरामंडीः द डायमंड बाजार' के सुपरहिट होने का। ओटीटी पर रिलीज के बाद से इस सीरीज ने तहलका मचा दिया। 'हीरामंडी' ने ग्लोबल लेवल पर भी अपना असर दिखाया। शानदार विजुअल्स, बेहतरीन संगीत, बांधने वाली कहानी, निर्देशन और कलाकारों के बेहतरीन परफॉर्मेंस ने दर्शकों के साथ समीक्षकों का भी दिल जीत लिया। गूगल ट्रेंड्स में ये वेब सीरीज साल 2024 की सबसे ज्यादा सर्च की जाने वाली सीरीज बन गई। ग्लोबल लिस्ट में जगह बनाने वाली यह एकमात्र भारतीय वेब सीरीज है। इसके अलावा मिर्जापुर-3, ग्यारह ग्यारह, पंचायत-3, सिटाडेल : हनी बनी, मर्डर इन माहिम और शेखर होम को दर्शकों ने पसंद किया।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

मैं आया हूं लेकर साज अपने हाथों में !

अशोक जोशी

फिल्मों का सारा कारोबार केवल कहानियों और मारधाड़ पर ही नहीं चलता। फिल्मों को चलाने में जितना योगदान कहानियों का होता है, उससे भी कहीं ज्यादा योगदान फिल्मी गीतों और उन साजों का होता है जिन्हें थामकर फिल्म के नायक या नायिकाएं पर्दे पर उतरती हैं। ऐसा नहीं है कि हिन्दी सिनेमा के नायकों के हाथों में सदा

नायिकाएं ही झूलती रहती हैं। नायिकाओं के साथ साथ जब इन सितारों ने अपने हाथों में साज थामे, इन्होंने पर्दे पर राज करने की परम्परा कायम की। राज कपूर निर्देशित 'बरसात' ऐसी फिल्म थी, जिसमें उन्होंने नायिका के साथ साथ अपने हाथों में वायलिन को इस अनूठे अंदाज में थामा कि कालांतर में यह आर के फिल्मस का लोगो बनकर छा गया।

सितारों के हाथों में जो साज आते हैं वह फिल्म की पृष्ठभूमि के अनुरूप हो जाते है। यदि फिल्म पौराणिक या ऐतिहासिक है तो सितारों के हाथों में अक्सर भारतीय साज ही सजे होते है। लेकिन, यदि किरदार शहरी और युवा हुआ तो उसके हाथों में आधुनिक साज सजे दिखाई देते हैं। यह साज न केवल पृष्ठभूमि बल्कि पर्दे पर उसकी हैसियत के हिसाब से भी थमाए जाते है। यदि नायक गरीब है तो उसके साज भी माउथ आर्गन या हारमोनियम जैसे सस्ते साज होंगे। यदि वह रईस या मालदार है तो वह पियानो पर ही बैठा दिखाई देगा या सैक्सोफोन और एकार्डियन जैसे महंगे साजों पर हाथ आजमाता दिखाई देगा।

हिंदी फिल्म में शायद ही ऐसा कोई सितारा होगा जिसने अपनी किसी न किसी फिल्म में साज को अपना साथी बनाया होगा। देव-दिलीप और राज कपूर की तिकड़ी से लेकर आज के रणबीर कपूर और कार्तिक आर्यन और अक्षय कुमार तक ने हाथों में साज लेकर पर्दे पर अपना रंग जमाया है। देव आनंद ने कमोबेश सभी तरह की भूमिकाएं निभायी। अक्सर वह शहरी युवा बनकर ही पर्दे पर आए। इसलिए जाल, कहीं और चल जैसी फिल्मों में उन्होने गिटार थामी। 'तीन देवियां' और 'माया' में वह पियानो बजाते दिखे। सत्तर साल की उम्र में उन्होंने फिल्म 'अमीर गरीब' में युवा नायक के रूप में अपने आपको प्रस्तुत करते हुए हाथों में सैक्सोफोन थामकर गाया है मैं आया हूं, लेकर साज हाथों में।

राज कपूर अक्सर गरीब युवा का प्रतिनिधित्व करते रहे। इसलिए, उनके हाथों में ग्रामीण युवक के प्रतिनिधि साज के रूप में ढपली ज्यादा सजी। 'श्री 420' और 'जिस देश में गंगा बहती है' में राज कपूर ने ढपली पर थाप दी। 'संगम' आते आते उनके तेवर बदल गए और इस फिल्म में उन्होंने एक गीत में एकार्डियन तो

दूसरे में बैगपाइप थामकर दर्शकों को चौंका दिया। क्योंकि, तब तक दर्शक इस तरह के साज से ज्यादा परिचित नहीं थे। राज कपूर की तरह दिलीप कुमार ने भी अधिकांश फिल्मों में आम भारतीय युवा का प्रतिनिधित्व किया। इस लिहाज से उनके हाथों में भारतीय साज ही आए। 'दीदार' में अंधे युवक की भूमिका करते हुए उन्होंने अपने कंधों पर हारमोनियम लटकाई तो 'कोहिनूर' में राज नर्तकी के घुंघरू के साथ संगत करते हुए सितार पर हाथ चलाते हुए अपनी उंगलियों को सही में लहूलुहान किया। लेकिन, 'लीडर' और 'राम और श्याम' में जब उन्होंने आधुनिक लिबास पहना तो हाथ में ट्रम्पेट और पियानो थाम लिया ।इससे पहले वह महबूब खान की फिल्म अंदाज में पियानो पर रंग जमाते दिखाई दिए।

हिन्दी सिनेमा की त्रिमूर्ति के बाद हिन्दी सिनेमा के मध्यकाल में राजेंद्र कुमार, धर्मेंद्र, मनोज कुमार, विश्वजीत और शम्मी कपूर का युग आया। इन सितारों ने भी मौके बेमौके अपने अपने हाथों में साज थामने में किसी तरह की कोताही नहीं बरती। राजेन्द्र कुमार ने गूंज उठी शहनाई में शहनाई के स्वर बिखेरे तो

गीत में अपनी कमर में बांसुरी खोंसकर आजा तुझको पुकारे तेरे गीत रे की धुन छेडी। धर्मेंद्र के फौलादी हाथों में साज ज्यादा नहीं दिखाई दिए। उन्होने ज्यादातर फिल्मों मे माइक थाम कर इसकी कमी पूरी की है।

मनोज कुमार ने पत्थर के सनम में पियानो पर बैठकर पत्थर के सनम गाया तो यादगार में एक तारा हाथ में लेकर सबकी पोल खोलने का काम भी किया। विश्वजीत ऐसे सितारे थे जिन्होने अपनी हर दूसरी फिल्म में सैक्सोफोन थामा। शम्मी कपूर के रोम-रोम से संगीत बरसता था। उन्होने भी खूब साज थामे है। ब्रह्मचारी में उन्हें पियानो पर गाते देखा तो कश्मीर की कली में माउथ ऑर्गन बजाते दिखाई दिए। तीसरी मंजिल ऐसी फिल्म थी जिसमें उन्होंने ड्रम प्लेयर की भूमिका की थी लेकिन एकाध दृश्य में ही ड्रम बजाते दिखाई दिए। पूरी फिल्म में सलीम खान ने यह काम अंजाम दिया।

ऐतिहासिक और पौराणिक फिल्मों में भारत भूषण, महिपाल जैसे सितारों ने अपने हाथों में साज थामे। भारत भूषण ने बसंत बहार में बांसुरी थाम कर निम्मी का दिल बहलाया तो महिपाल ने 'पारसमणि' में सितार थाम कर सलामत रहो का सुर छेडा। पौराणिक फिल्मों में जीवन एकमात्र ऐसे कलाकार थे जो नायक न होते हुए भी नारद की भूमिका में इतनी बार वीणा थामे दिखाई दिए कि गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज करवा लिया।

रोमांटिक नायक की पहचान ही हाथों में साज से ही होती है। जॉय मुखर्जी ने फिर वही दिल लाया हूं में गिटार थामी तो प्यार का मौसम में भारत भूषण ने मेंडोलिन और शशि कपूर ने गिटार। इसके अलावा नासिर हुसैन ने अपनी दूसरी फिल्म जमाने को दिखाना है से लेकर यादों की बारात तक हर फिल्म में नायक को साज के साथ ही पेश किया। राजेश खन्ना ने भी कहीं माउथ आर्गन तो कहीं गिटार और पियानो के साथ रूमानी रंग पेश किया। ऋषि कपूर ने ढपली से लेकर वायलिन और गिटार को अपना साथी बनाया। कपूर खानदान के चश्मो चिराग रणबीर कपूर ने रॉक स्टार बनकर गिटार थामी। अक्षय कुमार ओ माय गॉड में बांसुरी बजाते दिखाई दिए तो कार्तिक आर्यन और आयुष्मान खुराना ने भी अपने हाथों में साज थामने का काम अंजाम दिया है।

यह भी अजीब संयोग ही है कि हमारे यहां माता सरस्वती को संगीत की देवी माना जाता है लेकिन सिनेमा के पर्दे पर देवियों के हाथों में साज कम ही सजा है। नर्गिस ने जोगन में तो हेमा मालिनी ने मीरा से लेकर जॉनी मेरा नाम में एक तारा थामकर भक्ति के सुर बिखेरे है। ज्यादातर फिल्मों में नायिकाओं के हाथ में सितार ही सजा है। कभी कभी ऐसा हुआ है कि निर्माता भूल गया कि सितार कहां बजाना है। दिल एक मंदिर की नायिका जब हाथ में सितार लेकर गाती है हम तेरे प्यार में सारा आलम खो बैठे हैं तो भूल जाती है कि वह किसी मंदिर में नहीं बल्कि अस्पताल के वार्ड में है। इसके अलावा तबले और ढोलक पर भी फिल्मी सितारे हाथ आजमाते दिखाई दिए हैं। श्वेत श्याम युग में 1948 में बनी रंजन की फिल्म चंद्रकांता को उसके क्लाइमेक्स के लिए याद किया जाता है, जिसमें बहुत सारे सैनिक बडे से नगाडे मे छिप कर आते हैं और बागी खलनायक को हरा कर अपना राजपाट हासिल करते हैं।

यह दूरी... बन गई कैसी मजबूरी !

प्रकाश पुरोहित

मैं यदि क्रिकेटर नहीं बन पाया तो इसकी वजह यह नहीं थी कि मेरे पिताजी देश के होम-मिनिस्टर थे। अंदर की बात तो यह है कि पिताजी तो हमारे घर के भी गृह-मंत्री नहीं थे, क्योंकि यह मंत्रालय हमारी मां को दहेज में मिला था। मेरे पिताजी हिमाचल जैसे किसी राज्य के मुख्यमंत्री भी होते तो भी मैं, क्रिकेटर नहीं बन पाता, क्योंकि संभावना विरासत में बनी रहती।

गलत मत सोचिए, मेरे व्यक्तिगत कारण रहे, जिनकी वजह से मैं चाह कर भी क्रिकेटर नहीं बन पाया। जबकि उन दिनों, आज की तरह क्रिकेटर बनने का क्रेज नहीं था। मेरे अनुभव का लाभ लेते हुए अगर मेरे कुछ विनम्र सुझाव पर 'नान-क्रिकेटर आइसीसी चेयरमैन' ध्यान दें तो मेरे जैसे कई ऐसे हैं, जो खिलाड़ी बनने के लिए आज भी तैयार हैं।

यदि क्रिकेट और मेरे बीच, एक मजबूरी और लाइव टीवी नहीं आता तो आज आप मुझे क्रिकेटर की तरह याद कर रहे होते। बल्लेबाज बनना चाहता था, लेकिन आंख की शर्म और लाइव टीवी कवरेज सबसे बड़ा अड़ंगा रहा। चलिए, अपन ने किसी पारी में सौ रन बना दिए तो ठीक, उछलते-कूदते मैदान से पैवेलियन तक चले आए, बल्कि उस समय तो यही लगता रहता है कि रहती दुनिया तक यहीं उछलते रहें। मुश्किल तो तब होती है, जब आपके पहली ही गेंद पर डंडे बिखर जाते हैं। तब के उस दृश्य की कल्पना कीजिए। बल्लेबाज और टीम के खाते में एक भी रन नहीं है और आप विकेट खो चुके हैं। बिल्कुल बॉर्डर-गावसकर ट्रॉफी सीरीज की तरह। चूंकि क्रिकेट का नियम है कि आउट होने के बाद आप मैदान में नहीं रह सकते, जैसे चुनाव हारने के बाद मुख्यमंत्री, तो वहां से स्टेडियम तक का रास्ता 'दिन भर चले और अढ़ाई कोस' हो जाता है।

क्रिकेट में सबसे बुरा यही है कि आउट होने के बाद खिलाड़ी को पैदल चलते हुए, हजारों घूरती नजरों के सामने से गुजरते हुए, पैवेलियन तक जाना पड़ता है। रन बना लिए तो 'वाह-वाह' नहीं तो पूरे रास्ते 'हाय-हाय!' आप पहले ही 'हाय-हाय' कर रहे हैं और आपकी हाय में हजारों हाय और शामिल हो जाती हैं तो कदम उठाना भी मुश्किल हो जाता है!

एक तो रन नहीं बने और फिर इतनी लंबी यात्रा... बहुत नाइंसाफी है यह। अब ऐसे में पैवेलियन लौट रहा बल्लेबाज करे तो क्या करे! सबसे पहले वह बल्ले के उस होल को देखने की कोशिश करता है, जिसमें से होकर गेंद ने गिल्लियां उड़ाई थीं। उसे तमाम कोशिश के बावजूद वह छेद नजर नहीं आता। इस हरकत से दस फीसद रास्ता कट गया। आगे क्या, तो वह फिर हाथ के दस्ताने उतारता है। दोनों दस्ताने एक हाथ में पकड़ता है, फिर दूसरे हाथ से हेलमेट उतारता है, चेहरा दिखाने का तो कोई मौका नहीं है, मगर करे तो क्या। हेलमेट निकाल लिया तो हाथ सीधे सिर के बाल तक पहुंचता है, जुल्फ बिखराने की कोशिश करता है। शायर ने इसी वक्त के लिए लिखा होगा- 'ये जुल्फ अगर खुल के बिखर जाए तो अच्छा!' बीस फीसद रास्ता पार। ऐसे समय में मन तो करता है कि एक-एक कर सब उतार दे, जिसने इज्जत उतारी है, लेकिन बचा रास्ता पार करना है!

जब क्रिकेट में डीआरएस, थर्ड अंपायर और हॉक आइस जैसे आविष्कार हो चुके हैं तो इस बारे में जरूर कुछ सोचा जाना चाहिए था कि शर्मिंदा और नाकाम हो रहे बल्लेबाज को कम से कम समय में विकेट से पैवेलियन दाखिल करा दिया जाए। वह तो कहिए खिलाड़ी जिगरे वाले होते हैं, दूसरा कोई हो तो वहीं बीच मैदान में ही 'सीता जी' हो जाए।

तब मेरे दिमाग में यह आइडिया घर करता है कि क्यों ना विकेट से पैवेलियन तक का अंडर-ग्राउंड रास्ता बनाया जाए कि खिलाड़ी आउट हो, वैसे ही 'खुल जा सिम सिम' की तरह पिच खिसक जाए, पैवेलियन का रास्ता नजर आने लगे और खिलाड़ी यूं गायब हो जाए, जैसे कभी खेलने ही नहीं आया हो। चलिए, इसमें टेक्निकल दिक्कत आ सकती है कि गुफा के रास्ते का मेंटेनेंस कौन करेगा! लफड़े भी हो सकते हैं कि खिलाड़ी निकला तो था पैवेलियन के लिए, लेकिन पहुंचा ही नहीं। किसी लारेंस-गैंग ने अगुवा कर लिया।

इसलिए आसान तरीका यही रहेगा कि पुराने जमाने की पर्दे वाली बग्घी जैसी मोटर-कार फौरन रवाना कर दी जाए। जैसे कि आजकल ड्रिंक्स ट्राली आती है ना, ठीक वैसे ही कि खिलाड़ी थर्ड अंपायर की तरफ जाए, तभी हमारी यह खिलाड़ी ढोने वाली गाड़ी स्टार्ट हो जाए। यह गाड़ी हमारे शहर को स्वच्छ रखने वाली पीली-गाड़ी की तरह भी हो सकती है, कहने को ढक्कन है, लेकिन लगता कभी नहीं। खिलाड़ी का दम नहीं घुटेगा। उधर अंपायर आउट दे और इधर गाड़ी बीच मैदान में। लोग जब तक स्क्रीन पर 'आउट' देखें, इधर बल्लेबाज पैवेलियन के अंदर।

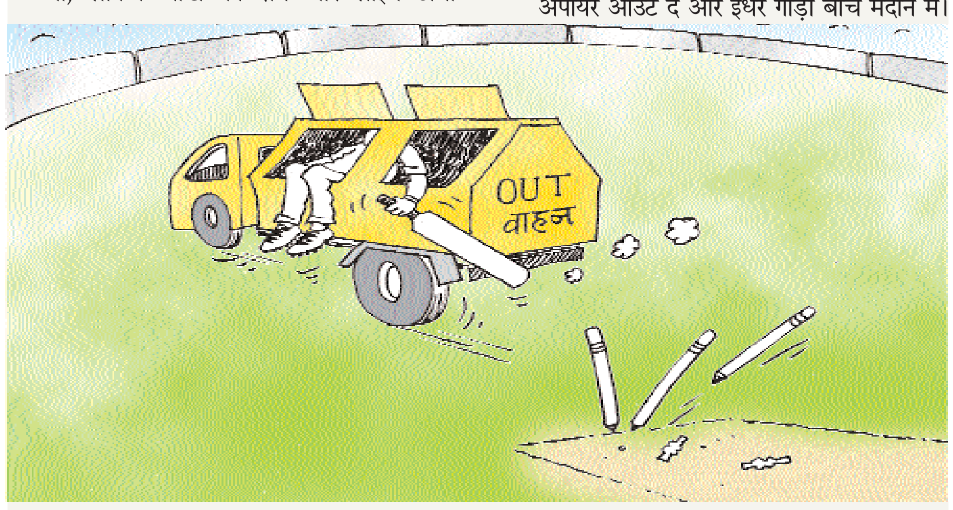

जब टीवी नहीं था तो फिर भी इतनी दिक्कत नहीं थी कि कुछ हजार लोग ही जाते हुए बल्लेबाज को कोस रहे हैं, लेकिन जब से ये लाइव कवरेज शुरू हुआ है, करोड़ों लोगों के सामने बल्लेबाज को शर्मिंदा किया जाता है। कम से कम इतनी हिम्मत तो दिखा ही सकते हैं कि जब बल्लेबाज आउट हो तो टीवी विज्ञापन तब तक चलाते रहें, जब तक कि वह पैवेलियन में पहुंच ना जाए और स्टेडियम में चीयर-लीडर्स को खड़ा कर दिया जाए। बाकी में तो ऐसा इंतजाम है, टेस्ट मैच की बात कर रहा हूं। यह भी कर सकते हैं कि स्टेडियम की स्क्रीन पर 'मन की बात' के टुकड़े लगाते रहें, ताकि कुछ आंखें बंद कर लें भक्तिभाव से! सरकार मनोरंजन टैक्स तो माफ कर ही चुकी है!

यकीन मानिए, आसपास समुद्र हो तो आउट बल्लेबाज डूबने का सोच ले, अगर तैरना नहीं आता हो। एक बार ऐसा ही हुआ था कि खिलाड़ी नया था, आउट हो गया, समझ नहीं पाया कि नजरें कहां जमाए! तो जमीन देखता हुआ चल दिया। लोग हैरान कि रिटायर होने का यह कैसा तरीका। बंदे ने नजर उठा कर यह भी नहीं देखा कि पैवेलियन की तरफ नहीं, मेन-गेट की तरफ जा रहा है। और देखते ही देखते वह स्टेडियम से बाहर ऐसा गया कि फिर कभी नहीं लौटा। गनीमत रही कि तब तक ट्वेल्थ-मेन का रिवाज शुरू हो चुका था और मैच पूरा खेला गया।

चार कदम की यह दूरी, बल्लेबाज को राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' जैसी लंबी लगती होगी, यह देखने वाले लोग क्या जानें। पांच मिनट का यह रास्ता तब सदियों लंबा हो जाता है, जब खिलाड़ी अपने साथ जीरो लिए लौटता है। यकीन ना हो तो रिटायर होने के बाद या अभी ही रोहित शर्मा से पूछ कर देखिए। कितनी कितनी बार, लगातार इस अजाब से इन दिनों गुजरना पड़ा है रोहित को, अगर ऐसे में रिटायर हो जाए तो क्या दोष। क्रिकेट में जरूरी सुधार ना होने की वजह से मेरे जैसे ना जाने कितने प्रतिभाशाली खिलाड़ी आज भारत की हार देखने के लिए मजबूर हैं!

क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

क्या एक वक्त में दो से प्यार हो सकता है?

क्या एक ही वक़्त में दो इंसानों से प्यार हो सकता है? ये बैठे ठाले मेरे दिमाग में कैसे सवाल घूमते रहते हैं? पर ये बैठे ठाले नहीं जीवन में जो दूसरों पे गुज़रती है या खुद के अनुभव हो या स्त्री हो या पुरूष मैंने देखा, सुना, महसूस किया। कुछ लोगों की दास्तां बड़ी सरल सी लगी, कुछ का सफर कठिन। कुछ की 'अब कौन उलझे?' जैसी। ये इंसान का मन है अलग अलग तरीके से सोचता है।

मैं सबसे पहले अपनी घरेलू मददगार की बात सुनाना चाहती हूं। आये दिन उसकी शिकायत रहती है कि उसका पति उसे पीटता है, रात में देर से आता है, दूसरी औरत रखे है। आप कह सकते हैं, अरे इन लोगों के लिये प्यार-व्यार कुछ नहीं होता। मेरा जवाब होगा, होता है जनाब। मेरे सामने उदाहरण है। रोज रोने वाली मददगार से जब मैं कहती हूं तुम कमाती हो। बच्चे, घर संभालती हो वो तो काम भी नहीं करता। उसकी अय्याशी के लिये भी पैसे तुम देती हो। छोड़ क्यों नहीं देती? मैं अवाक् रह जाती जब वो कहती मैं तो उसे प्यार करती हूं ना दीदी। रात को तो मेरे ही घर लौट के आता है।

मैं सोचती रह गई कोई स्त्री ऐसे हालातों में, ऐसे पुरूष से प्यार कैसे कर सकती है? फिर तो मुझे ऐसे ढेरों उदाहरण मिले जिसमें सबने बेवफा पति से बेइंतहा मुहब्बत का दावा किया। हमारे एक मित्र है जिनके बारे में पूरा शहर जानता है कि उनकी एक महिला मित्र है। उनकी पत्नी पढ़ी लिखी समझदार खूबसूरत है। वो जब भी अलग होना चाहती है, उनका रोना पीटना, आत्महत्या की धमकी देना शुरू हो जाता है। मैं तुम्हारे बगैर रह नहीं सकता सुन कर वो कहती फिर तुम कोई एक चुन लो। वो रोते हुये कहते हैं, मैं उसे भी नहीं छोड़ सकता।

ये तो बड़ी विचित्र बात लगी। मैंने उससे कहा, तुम छोड़ दो, वो मरेगा नहीं तब वो कहती है, किसी की हत्या का पाप नहीं ले सकती। फिर मेरे बच्चों को समाज कहेगा इनके बाप ने मां से परेशान हो आत्महत्या कर ली।

वो अभी भी ऐसे ही जी रही है। अब बच्चे बड़े हो गये है कहते है अब तुम पापा को छोड़ दो, वो वही कहती, जो मेरी मददगार ने कहा था अब क्या छोंडू जिंदगी गुज़र गई फिर मैं तो उनसे प्यार करती हूं।

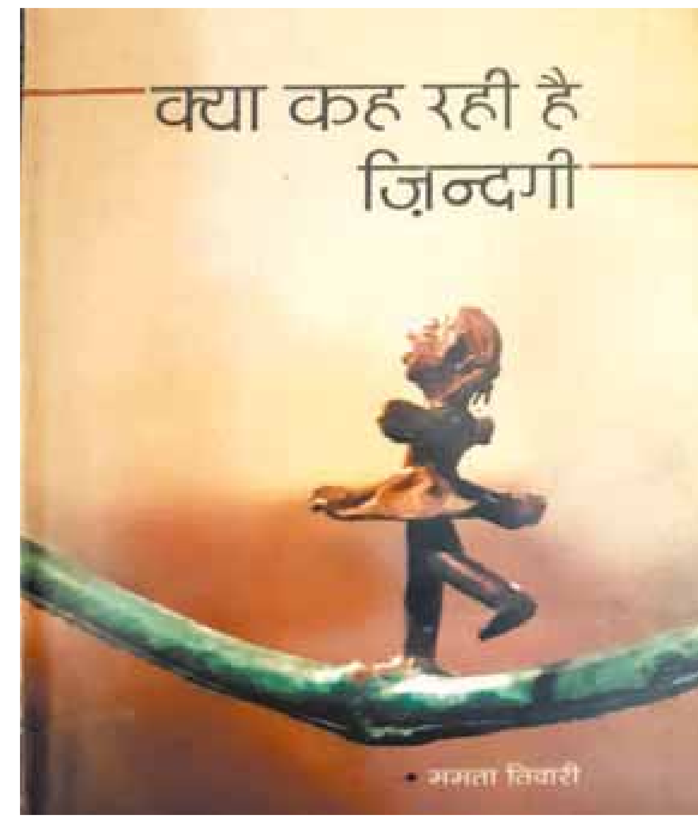

जिसे भी देखिये बेवफ़ा से मुहब्बत में पड़ा है। मेरे बहुत ही क़रीबी है जिन्हें एक दिन पता चला कि पत्नी जो बीच बीच में टूर पर जाती है वहां उनका बचपन का मित्र जो शादी से पहले से उसका बॉय फ्रेंड था अभी भी उससे रिश्ता है। वो भागा हुआ मेरे पास आया। मैंने कहा तुम्हारे पास क्या प्रूफ है। यही मुझसे गलती हो गई। ऐसी बातों के प्रमाण इकट्ठा करते हुए इंसान बहुत पीड़ा से गुज़रता है। वो फिर आया, जाने क्या क्या टेक्नालॉजी से उसने उसके फोन टैप किए। अब वो आदमी उसकी अनुपस्थिति में घर आने लगा। अब उसके पास रिकॉर्डिंग थी। आंखों देखे घर में आने के सुबूत थे। मैंने कहा अब तुम उसे सामने बैठा कर सारे सुबूत दिखाओ और बात करो और ऐसी स्त्री को जाने को कह दो। बच्चे अब बड़े हो रहे हैं। वह सिर झुका कर कहता है कि मैं उसे नहीं छोड़ सकता। वो मेरे बच्चों की मां है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूं।

मुझे बहुत गुस्सा आया जब तुम्हें सच्चाई जानकर भी उसे छोड़ना नहीं था तो सुबूत क्यों इकट्ठा किए? इतनी तकलीफ झेली, पूरे समय बैचेन रहते थे। अब तुम ये सब छोड़ दो और जैसे रहते हो रहो। एक दिन उसने बात की पर सुबूत नहीं सुनाये। उसने साफ मना कर दिया और कहा कि अगर तुम्हें विश्वास नहीं है तो मैं चली जाती हूं। उसे मालूम था वो सच में चली जाएगी। उसने उनकी बातें सुन रखी थी वो अभी भी उसके लिये कुंवारा बैठा था। वो फिर भी टैप करता रहा सुनता, शराब पीता, दु:खी होता।

अब ऐसे लोगों का क्या करें? मेरा सवाल तो बदस्तूर है क्या एक ही वक़्त में आदमी दो लोगों को प्यार कर सकता है? आखिर मजबूर होकर मैंने अपनी मनोसलाहकार मित्र डॉ. सीमा विजयवर्गीय को फोन लगाया। उसने स्पष्ट किया कि ऐसा नहीं होता कि एक वक़्त में दो लोगो से प्यार किया जाए क्योंकि प्यार और केअर और स्वार्थ अलग चीज़ें है। तुम्हारी मददगार के पति को वो छोड़ना नहीं चाहती। पति भी क्योंकि पत्नी को समाज से प्रोटेक्शन चाहिए। पति कुछ कमाता नहीं उसे पैसा, सुविधा चाहिये। दूसरे केस में भी पत्नी के छोड़ने के डर से उसे समाज और बच्चों की चिंता थी। दोनो परिस्थितियों में एक से प्यार का रिश्ता है एक से स्वार्थ का रिश्ता है। हम इसे आकर्षण और प्यार भी समझ सकते है। बहुधा कई बार पुरूष दोनों को ही प्यार नहीं करता स्वार्थ, हवस उसपे हावी रहती है पर स्त्री बहुत कम दो लोगों से एक वक़्त में प्यार करती है। एक से प्यार करती है दूसरे को बेचारा समझ केअर करती है। अपराध बोध से घिरी बच्चे, परिवार का सोचती है पर वो अगर स्वयं घर छोड़ना चाहे तो उसे जाने दें। वो सच में आपसे प्यार नहीं करती।

इस कड़वे सच को स्वीकार करना होगा एक बार तकलीफ होगी पर आप संभल जाएंगे, इसलिए विश्वास प्यार के बाद भी पूछते रहें एक दूजे से और क्या कह रही है जिंदगी।

अकेला नहीं है राहगीर ...

हाथों में मोबाइल लिए जी रही हमारी दुनिया की आंखों से बहुत कुछ छूट रहा है। बहुत कुछ है जो दृश्य बन हमारी स्मृतियों में ठहर नहीं पा रहा है।

फोटो : ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और व्यंग्यकार हैं।

बस, एक पूड़ी और लीजिए हमारे कहने से

तिवारी जी आज त्रिपाठी जी का किस्सा सुना रहे थे।

दामादों की ससुराल में बड़ी आवभगत हुआ करती थी उस जमाने में। पहली बार पत्नी को लेने रात भर की बस यात्रा करके जब ससुराल पहुंचे तो भूख लग आई थी। ससुराल पहुंचते ही नाश्ता परोसा गया। भूख लगी थी और साथ ही सास और सालियों का मनुहार तो कुछ ज्यादा ही खा लिया।

थोड़ी देर आराम करके जैसे ही नहा कर तैयार हुए ही थे तो लंच परोस दिया गया। न जाने कितने पकवान बनाए थे, मानो दामाद नहीं, कोई सूमो पहलवान पधारे हों भोजन करने। क्या बताते कि थोड़ा मोटे जरूर हैं मगर हर मोटा आदमी भोजन दबा कर ही करता हो यह भी तो जरूरी नहीं। भोजन की थाली सजा दी गई और हम खाना खाने लगे। एक खाने वाला और उसे चारों और से घेरे आठ लोग परोसने वाले। पेट भर गया लेकिन कभी सासू माँ जिद कर एक पूड़ी और खिलाए दे रही हैं और वो अभी खत्म भी नहीं हुई कि साली एक और थाली में डाल गई। दोनों हाथ से थाली छेक कर मना कर भी रहे हैं मगर साईड से पूड़ी सरका दे रहे हैं थाली में। हालत ये हो गई कि खाना पेट में ही नहीं बल्कि गले तक भर गया। तब तक देखा कि बड़ी साली दो गुलाब जामुन कटोरे में सजा कर ले आई कि बिना मीठे के भी खाना होता है। तब तक दूसरी साली रबड़ी ले आई कि गुलाब जामुन बिना रबड़ी के भी भला कौन खाता है। पहली बार ससुराल पधारे थे तो क्या करते- वो भी खाना ही पड़ा।

देश के हालात ऐसे हैं कि न जाने कितने लोगों को दो जून का खाना नसीब नहीं और दामाद जी को 6 बार का खाना एक ही बार में खिलवा दिया। किसी तरह उठ कर कमरे में आए तो बिस्तर पर लेटते ही भगवान से एक ही प्रार्थना करते रहे कि आज अगर जिंदा बच गए तो आगे से कभी ससुराल नहीं आएंगे। शाम की बस से वापस निकलना था तो शाम का नाश्ता करने और साथ ले जाने के लिए खाना बांधने की तैयारियां सुनाई पड़ने लगी। बेहोशी की हालत में किसी तरह निकल पाए वापसी के लिए। बस स्टैंड पर एक भिखारी दिखा। मन तो किया कि सारा बांध के दिया खाना उसको पकड़ा दें मगर पत्नी साथ थी इसलिए नहीं दिए।

अभी बस चली ही थी कि पत्नी कहने लगी कि खाना निकालूँ? किसी तरह उसको समझाया कि बस यात्रा में जी मितलाता है। कुछ भी खा लूँगा तो उलटी होने लगती है। आते वक्त तो बस एक केला ही खाया था और उलटी हो गई थी।

वो दिन है और आज का दिन। फिर न तो यात्रा में इन्होंने खाने को पूछा और न ही कभी कुछ खाने को दिया। हर बार तो ससुराल से यात्रा शुरू नहीं होती है। अतः भूख तो लगेगी ही भले ही आप यात्रा में हों। अब हालत ये हैं कि जब कभी कहीं बस रुकी तो धीरे से उतर कर समोसा पकोड़ी खा आते हैं और जब बस में लौट कर आते हैं तो इनको अकेले पूड़ी सब्जी खाते देख कर उस रात को याद करते हैं जब पहली बार इनको ससुराल से ले कर निकले थे।

इस साल नववर्ष पर बड़े दिनों बाद ये घटना ऐसे याद आई क्यूंकि बधाइयों और शुभकामनाओं की सुनामी आई हुई है। फेसबुक भरा हुआ है बधाई और शुभकामनाओं से। जो फेसबुक पर नहीं दे पाए वो ट्विटर पर बधाई परोसा दे रहा है। थोड़ा और करीबी व्हाट्सएप पर परोस जा रहा है तो कोई टेक्स्ट मैसेज से। एक अकेले हम और शुभकामना देने वाले इत्ते सारे- जवाब दे पाना भी संभव नहीं। चार दिन हो गए हैं अभी भी कहीं न कहीं से चला ही आ रहा है शुभकामना संदेश और मुझे सुनाई दे रहा है- बस एक पूड़ी और लीजिए हमारे कहने से।